नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 134
दि. 16.02.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

अमेरिका ट्रेड डील पर घमासान, राहुल गांधी ने किसानों के भविष्य और कृषि संप्रभुता पर उठाए बड़े सवाल

(जीएनएस)। Rahul Gandhi ने अमेरिका के साथ प्रस्तावित ट्रेड डील को लेकर केंद्र सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए इसे भारतीय किसानों के हितों के लिए संभावित खतरा बताया है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और Indian National Congress के वरिष्ठ नेता के रूप में उन्होंने इस समझौते को केवल एक व्यापारिक करार नहीं, बल्कि देश की कृषि व्यवस्था और आत्मनिर्भरता से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा बताया। उन्होंने कहा कि यह डील भविष्य में भारत की कृषि नीति, किसानों की आर्थिक सुरक्षा और देश की खाद्य संप्रभुता को प्रभावित कर सकती है, इसलिए सरकार को पारदर्शिता के साथ देश के सामने इसकी पूरी जानकारी रखनी चाहिए। राहुल गांधी ने कहा कि वे प्रधानमंत्री Narendra Modi से कुछ सरल लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण सवाल पूछना चाहते हैं, जिनका जवाब देश के करोड़ों किसानों और कृषि से जुड़े लोगों के लिए जानना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यह केवल एक राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि यह देश के किसानों की आजीविका और भविष्य से जुड़ा विषय है। उन्होंने कहा कि यदि इस समझौते के तहत अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए भारतीय बाजार खोला जाता है, तो इससे देश के छोटे और मध्यम किसानों को गंभीर आर्थिक नुकसान हो सकता है।

अपने पहले सवाल में उन्होंने DDG यानी डिस्टिलर्स ड्राइड ग्रेन्स के आयात को लेकर चिंता जताई। उन्होंने पूछा कि क्या इसका मतलब यह है कि भारत में पशुओं को जेनेटिकली मॉडिफाइड अमेरिकी मक्का से बने उत्पाद खिलाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि यदि ऐसा होता है, तो भारत का डेयरी क्षेत्र धीरे-धीरे विदेशी कृषि उत्पादों पर निर्भर हो सकता है, जिससे देश की आत्मनिर्भरता कमजोर हो सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत का डेयरी उद्योग लाखों छोटे किसानों की आय का प्रमुख स्रोत है, और किसी भी विदेशी निर्भरता से उनकी आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है।

राहुल गांधी ने अपने दूसरे सवाल में जेनेटिकली मॉडिफाइड सोया तेल के संभावित आयात को लेकर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि भारत के कई राज्यों जैसे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में सोया की खेती बड़े पैमाने पर होती है, और लाखों किसान इससे अपनी आजीविका चलाते हैं। यदि सस्ते विदेशी सोया तेल को भारतीय बाजार में अनुमति दी जाती है, तो इससे घरेलू उत्पादन की मांग कम हो सकती है और किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल पाएगा। उन्होंने कहा कि इससे किसानों की आय पर सीधा असर पड़ेगा और कृषि क्षेत्र में असंतुलन पैदा हो सकता है।

उन्होंने तीसरे सवाल में 'अतिरिक्त उत्पादों' के दायरे को लेकर स्पष्टता मांगी। उन्होंने पूछा कि क्या भविष्य में इस समझौते के तहत दालों, अनाज और अन्य महत्वपूर्ण कृषि उत्पादों को भी विदेशी आयात के लिए खोल दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि ऐसा होता है, तो यह देश के खाद्य सुरक्षा तंत्र और किसानों की आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती बन सकता है। उन्होंने कहा कि भारत जैसे विशाल कृषि प्रधान देश के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उसकी कृषि नीति स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनी रहे।

अपने चौथे सवाल में राहुल गांधी ने नॉन-टैरिफ बैरियर्स यानी गैर-शुल्क बाधाओं को हटाने के संभावित प्रभावों पर चिंता जताई। उन्होंने पूछा कि क्या इस समझौते के कारण भारत पर भविष्य में जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों को अनुमति देने, सरकारी खरीद प्रणाली को कमजोर करने या न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी नीतियों में बदलाव करने का दबाव बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि MSP और सरकारी खरीद प्रणाली देश के किसानों के लिए सुरक्षा कवच की तरह हैं, और यदि इन व्यवस्थाओं को कमजोर किया जाता है, तो किसानों की आर्थिक सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। उन्होंने अपने पांचवें और अंतिम सवाल में इस समझौते की सीमाओं और दीर्घकालिक प्रभावों को लेकर स्पष्टता मांगी। उन्होंने कहा कि यदि एक बार विदेशी कृषि उत्पादों के लिए बाजार खोल दिया जाता है, तो भविष्य में हर साल नए उत्पादों को इस दायरे में शामिल करने का दबाव बढ़ सकता है। उन्होंने कहा कि सरकार को यह स्पष्ट करना चाहिए कि इस प्रक्रिया की सीमा क्या होगी और किसानों के हितों की रक्षा कैसे की जाएगी। इस मुद्दे को लेकर विपक्षी दलों और किसान संगठनों ने भी चिंता जताई है। कई संगठनों का मानना है कि इस प्रकार के समझौते से घरेलू कृषि क्षेत्र को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है, जिससे छोटे किसानों के लिए स्थिति कठिन हो सकती है। इस विरोध के तहत विभिन्न संगठनों ने देशव्यापी विरोध प्रदर्शन और भारत बंद का आह्वान भी किया, जिसमें सरकार से इस समझौते की पूरी जानकारी सार्वजनिक करने की मांग की गई।

वहीं केंद्र सरकार ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि यह समझौता भारत के आर्थिक विकास और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। केंद्रीय मंत्री Piyush Goyal और Amit Shah ने कहा कि इस समझौते से भारत के कई क्षेत्रों को लाभ होगा और किसानों के हितों की पूरी तरह रक्षा की जाएगी। सरकार का कहना है कि इस डील से भारतीय उत्पादों को अमेरिकी बाजार में बेहतर पहुंच मिलेगी और इससे देश के निर्यात में वृद्धि होगी। सरकार का यह भी कहना है कि इस समझौते से भारत के कपड़ा, तकनीक और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों को नए अवसर मिलेंगे। इसके अलावा, दोनों देशों के बीच आपूर्ति श्रृंखला, निवेश और तकनीकी सहयोग को भी मजबूत किया जाएगा। सरकार के अनुसार, यह समझौता भारत की वैश्विक आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में मदद करेगा और देश के विकास को नई गति देगा।

यह पूरा विवाद इस बात को दर्शाता है कि व्यापारिक समझौते केवल आर्थिक विषय नहीं होते, बल्कि उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव भी होता है। भारत जैसे देश में, जहां करोड़ों लोग कृषि पर निर्भर हैं, किसी भी व्यापारिक समझौते का प्रभाव व्यापक और दीर्घकालिक हो सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि ऐसे समझौतों में पारदर्शिता और संतुलन बनाए रखा जाए, ताकि आर्थिक विकास और किसानों के हितों के बीच संतुलन कायम रह सके।

राहुल गांधी के सवालों ने इस मुद्दे को राष्ट्रीय बहस का विषय बना दिया है और इससे यह स्पष्ट हो गया है कि आने वाले समय में कृषि नीति और अंतरराष्ट्रीय व्यापार को लेकर व्यापक चर्चा होगी। यह बहस केवल एक राजनीतिक विवाद नहीं है, बल्कि यह देश के किसानों, कृषि व्यवस्था और आर्थिक भविष्य से जुड़ा महत्वपूर्ण विषय है। ऐसे में यह आवश्यक है कि सरकार और सभी संबंधित पक्ष मिलकर ऐसा समाधान निकालें, जिससे देश के आर्थिक हित और किसानों की सुरक्षा दोनों सुनिश्चित हो सकें।

आगरा एयरफोर्स स्टेशन में संदिग्ध पाकिस्तानी गुब्बारा मिलने से अलर्ट, सुरक्षा एजेंसियों ने शुरू की व्यापक जांच

(जीएनएस)। उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक शहर आगरा में स्थित भारतीय वायुसेना के अत्यंत संवेदनशील एयरफोर्स स्टेशन परिसर में एक संदिग्ध पाकिस्तानी गुब्बारे की बरामदगी ने सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क कर दिया है। यह घटना न केवल स्थानीय प्रशासन के लिए, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी बेहद गंभीर मानी जा रही है। गुब्बारे पर 'Pakistan International Airlines' अंकित होने और उस पर उर्दू में लिखे शब्दों के मिलने से मामले ने और अधिक संवेदनशील रूप ले लिया है। सुरक्षा एजेंसियां इस घटना को केवल एक सामान्य वस्तु की बरामदगी मानकर नहीं चल रही हैं, बल्कि इसके पीछे संभावित जासूसी या किसी साजिश की आशंका को भी गंभीरता से जांच के दायरे में रखा गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, यह गुब्बारा आगरा एयरफोर्स स्टेशन के तकनीकी क्षेत्र में पाया गया, जो अत्यधिक सुरक्षा और निगरानी वाला इलाका माना जाता है। गुब्बारा आधा हरे और आधा सफेद रंग का था, जो पाकिस्तान के राष्ट्रीय ध्वज के रंगों से मेल खाता है। उस पर

स्पष्ट रूप से Pakistan International Airlines का नाम लिखा हुआ था। इसके अतिरिक्त गुब्बारे पर उर्दू भाषा में कुछ शब्द और 'SGA' जैसे अक्षर भी अंकित पाए गए, जिससे यह मामला और अधिक संदिग्ध बन गया है। चूंकि एयरफोर्स स्टेशन देश की रक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, इसलिए वहां किसी भी बाहरी और संदिग्ध वस्तु का मिलना सुरक्षा में संभावित चूक का संकेत माना जा रहा है।

इस घटना की सूचना मिलते ही एयरफोर्स प्रशासन ने तत्काल कार्रवाई करते हुए स्थानीय पुलिस को सूचित किया। शाहगंज थाना पुलिस मौके पर पहुंची और गुब्बारे को अपने कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। इसके साथ ही एयरफोर्स अधिकारियों ने इस संबंध में औपचारिक एफआईआर दर्ज कराई, ताकि घटना की हर पहलू से विस्तृत जांच की जा सके। सुरक्षा एजेंसियों ने एयरफोर्स स्टेशन और उसके आसपास के इलाकों की निगरानी बढ़ा दी है और पूरे क्षेत्र में अलर्ट घोषित कर दिया गया है।

जांच एजेंसियों के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतना संवेदनशील और सुरक्षित क्षेत्र होने के बावजूद यह गुब्बारा वहां तक कैसे पहुंचा। आगरा अंतरराष्ट्रीय सीमा से काफी दूर स्थित है, इसलिए यह संभावना भी जांच के दायरे में है कि गुब्बारा हवा के रुख के कारण यहां तक पहुंचा हो या फिर किसी सुनियोजित तरीके से इसे वहां छोड़ा गया हो। सुरक्षा एजेंसियां इस बात की भी जांच कर रही हैं कि कहीं इस गुब्बारे का उपयोग किसी प्रकार की जासूसी गतिविधि के लिए तो नहीं किया गया।

पुलिस और खुफिया विभाग ने एयरफोर्स स्टेशन और आसपास के क्षेत्रों में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है। इसका उद्देश्य यह पता लगाना है कि गुब्बारा किस दिशा से आया और किस समय एयरफोर्स परिसर में पहुंचा। इसके अलावा आसपास रहने वाले लोगों और एयरफोर्स स्टेशन के कर्मचारियों से भी पूछताछ की जा रही है, ताकि घटना से संबंधित कोई महत्वपूर्ण सुराग मिल सके। जांच एजेंसियां हर संभावित कोण से मामले की जांच कर रही हैं, जिससे किसी भी तरह की सुरक्षा चूक या साजिश की संभावना को स्पष्ट किया जा सके।

एसीपी गौरव सिंह ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि जैसे ही गुब्बारा मिलने की सूचना मिली, तुरंत पुलिस टीम मौके पर पहुंची और इसे कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी गई। उन्होंने कहा कि सुरक्षा एजेंसियां इस मामले को बेहद गंभीरता से ले रही हैं और किसी भी संभावना को नजरअंदाज नहीं किया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया गया है और खुफिया एजेंसियों के साथ समन्वय बनाकर जांच को आगे बढ़ाया जा रहा है।

रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि आधुनिक समय में जासूसी के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों और तरीकों का उपयोग किया जाता है, जिनमें गुब्बारों का उपयोग भी शामिल हो सकता है। हालांकि इस मामले में अभी तक यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि यह गुब्बारा किसी जासूसी गतिविधि का हिस्सा था या केवल एक सामान्य वस्तु थी, जो हवा के कारण यहां तक पहुंच गई। इसके बावजूद, सुरक्षा एजेंसियां किसी भी संभावना को नजरअंदाज नहीं करना चाहतीं और पूरी सतर्कता के साथ जांच कर रही हैं।

यह घटना देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण संकेत भी है कि संवेदनशील क्षेत्रों की निगरानी और सुरक्षा को और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। एयरफोर्स स्टेशन जैसे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में किसी भी प्रकार की चूक गंभीर परिणाम ला सकती है, इसलिए इस तरह की घटनाओं को अत्यंत गंभीरता से लिया जाता है।

नन्ही एलिन बनी जीवन की रोशनी, अंगदान से पांच लोगों को नई जिंदगी देकर राजकीय सम्मान के साथ विदाई

(जीएनएस)। केरल की धरती ने एक ऐसी भावनात्मक और प्रेरणादायक घटना देखी, जिसने पूरे समाज को मानवता, त्याग और करुणा का गहरा संदेश दिया। महज 10 महीने की मासूम एलिन शेरिन अब्राहम ने इस दुनिया से विदा लेते हुए पांच लोगों को नया जीवन दे दिया। इतनी छोटी उम्र में इस बच्ची ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया, वह न केवल केरल बल्कि पूरे देश के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय बन गया। एलिन को उसके इस असाधारण योगदान के लिए राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई, जहां हर आंख नम थी और हर दिल इस नन्ही आत्मा के साहस और उसके परिवार के महान निर्णय को सलाम कर रहा था।

यह घटना एक दर्दनाक सड़क हादसे से शुरू हुई, जिसमें एलिन गंभीर रूप से घायल हो गई थी। हादसे के बाद उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे बचाने के लिए हर संभव प्रयास किया। कई घंटों तक चली चिकित्सा प्रक्रिया के बावजूद डॉक्टरों को अंततः यह घोषणा करनी पड़ी कि एलिन ब्रेन-डेड हो चुकी है। यह खबर परिवार के लिए असहनीय थी, क्योंकि जिस बच्ची की किलकारियां कुछ समय पहले तक घर में गूंजती थीं, अब वह जीवन और मृत्यु के बीच अंतिम पड़ाव पर पहुंच चुकी थी। लेकिन इस गहरे दुख के बीच एलिन के माता-पिता ने एक ऐसा निर्णय लिया, जिसने उनकी बेटी को हमेशा के लिए अमर बना दिया।

एलिन के माता-पिता ने अपनी बच्ची के अंगदान का निर्णय लिया, ताकि उसकी विदाई किसी अंत का प्रतीक न बने, बल्कि कई नई शुरुआतों का कारण बने। उन्होंने एलिन का लिवर, किडनी, हार्ट वाल्व और कॉर्निया दान करने की अनुमति दी। इस निर्णय के बाद चिकित्सा टीम ने अंग प्रत्यारोपण की प्रक्रिया शुरू की और एलिन के अंगों ने पांच जरूरतमंद मरीजों को नया जीवन दिया। जिन लोगों के जीवन की उम्मीद लगभग समाप्त हो चुकी थी, उनके लिए एलिन एक नई आशा बनकर आई। यह केवल एक चिकित्सा प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि मानवता की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति थी, जिसमें एक मासूम बच्ची की विदाई ने कई परिवारों में खुशियां लौटा दीं।

एलिन के इस महान योगदान को सम्मान देने के लिए केरल पुलिस ने उसे गार्ड ऑफ ऑनर दिया। यह दृश्य अत्यंत भावुक करने वाला था, जब वर्दीधारी जवानों ने पूरी श्रद्धा और सम्मान के साथ इस नन्ही बच्ची को अंतिम सलामी दी। यह सम्मान इस बात का प्रतीक था कि एलिन केवल एक परिवार की बेटी नहीं रही, बल्कि वह पूरे समाज की बेटी बन गई थी, जिसने अपने छोटे से जीवन में एक असाधारण उदाहरण स्थापित किया।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री सुरेश गोपी और केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने भी उपस्थित होकर एलिन को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने एलिन के माता-पिता के साहस और उनके निर्णय की सराहना करते हुए कहा कि यह मानवता के लिए एक महान उदाहरण है। वीना जॉर्ज ने अपने संदेश में कहा कि एलिन का योगदान न केवल चिकित्सा जगत के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज को एक सकारात्मक दिशा में प्रेरित करने वाला कदम भी है। उन्होंने यह भी कहा कि अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि और अधिक लोग इस दिशा में आगे आएं और जरूरतमंदों को जीवनदान मिल सके।

एलिन का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान और धार्मिक परंपराओं के अनुसार किया गया। मल्लापल्ली से नेडुंगडप्पल्ली स्थित सेंट थॉमस सीएसआई चर्च तक अंतिम यात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। हर कोई इस नन्ही बच्ची को अंतिम विदाई देने के लिए उपस्थित था। वातावरण में गहरा सन्नाटा और भावनात्मक माहौल था, जहां लोग अपने आंसुओं को रोक नहीं पा रहे थे। यह केवल एक अंतिम संस्कार नहीं था, बल्कि मानवता के प्रति सम्मान और एक महान आत्मा को श्रद्धांजलि देने का क्षण था।

कोलंबो में भारत का परचम: 'सूर्या सेना' ने पाकिस्तान को 61 रन से रौंदा, टी20 वर्ल्ड कप में 8–1 की ऐतिहासिक बढ़त

(जीएनएस)। क्रिकेट केवल एक खेल नहीं, बल्कि भारत और पाकिस्तान के बीच एक भावनात्मक संग्राम भी है, जहां हर मुकाबला इतिहास के पन्नों में दर्ज होने की क्षमता रखता है। भारतीय क्रिकेट टीम और पाकिस्तान क्रिकेट टीम के बीच जब भी मुकाबला होता है, तो पूरी दुनिया की निगाहें इस पर टिक जाती हैं। कोलंबो के प्रतिष्ठित आर. प्रेमदासा स्टेडियम में खेले गए टी20 वर्ल्ड कप के इस महत्वपूर्ण मुकाबले में भारत ने एक बार फिर अपने चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 61 रन से करारी शिकस्त देकर न केवल मैच जीता, बल्कि अपने दबदबे को और मजबूत करते हुए इतिहास में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया। इस जीत के साथ भारत ने टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के खिलाफ 8–1 की ऐतिहासिक बढ़त बना ली, जो भारतीय क्रिकेट की निरंतर श्रेष्ठता का प्रमाण है। इस मुकाबले की शुरुआत पाकिस्तान के टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने के फैसले के साथ हुई। भारतीय टीम जब बल्लेबाजी के लिए उतरी, तो शुरुआत उम्मीद के मुताबिक नहीं रही। युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गए, जिससे टीम पर शुरुआती दबाव बन गया। लेकिन इसके बाद मैदान पर आए ईशान किशन ने अपने आत्मविश्वास और आक्रामक शैली से मैच का रुख पूरी तरह बदल दिया। ईशान ने केवल 40 गेंदों में 77 रन की शानदार पारी खेली, जिसमें 10 चौके और 3 छक्के शामिल थे। उनकी बल्लेबाजी में न केवल ताकत थी, बल्कि तकनीक और संयम का भी अद्भुत संतुलन दिखाई दिया। उन्होंने हर पाकिस्तानी गेंदबाज को आत्मविश्वास

के साथ खेलते हुए भारतीय पारी को मजबूती प्रदान की। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने भी अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया और 32 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली। सूर्यकुमार की बल्लेबाजी में अनुभव और रणनीति की झलक साफ दिखाई दी। उन्होंने ईशान के साथ मिलकर टीम को स्थिरता प्रदान की और रन गति को बनाए रखा। तिलक वर्मा ने 25 रन और शिवम दुबे ने 27 रन बनाकर टीम के स्कोर को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। अंतिम ओवरों में रिंकू सिंह ने केवल 4 गेंदों में 11 रन बनाकर भारतीय पारी को शानदार समापन दिया। उनकी तेज और प्रभावी बल्लेबाजी ने भारत के स्कोर को 175 रन तक पहुंचा दिया, जो इस महत्वपूर्ण मुकाबले में एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य साबित हुआ।

पाकिस्तान की ओर से गेंदबाजी में सैम अयूब ने सबसे अच्छा प्रदर्शन करते हुए 3 विकेट लिए, जबकि उस्मान तारिक, शाहीन आफरीदी और सलमान आगा को एक-एक विकेट मिला। हालांकि, भारतीय बल्लेबाजों की आक्रामकता और आत्मविश्वास के सामने पाकिस्तानी गेंदबाज पूरी तरह प्रभावी साबित नहीं हो सके। भारतीय टीम ने संतुलित और योजनाबद्ध बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए एक मजबूत स्कोर खड़ा किया।

176 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी पाकिस्तान की टीम की शुरुआत बेहद निराशाजनक रही। भारतीय गेंदबाजों ने शुरुआत से ही दबाव बनाना शुरू कर दिया। जसप्रीत बुमराह और हार्दिक पंड्या की सटीक और आक्रामक गेंदबाजी ने पाकिस्तान के शीर्ष क्रम को पूरी तरह हिला दिया। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम केवल 5 रन बनाकर आउट हो गए, जिससे टीम की स्थिति और कमजोर हो गई। शुरुआती ओवरों में ही पाकिस्तान ने अपने तीन महत्वपूर्ण विकेट केवल 13 रन पर गंवा दिए, जिससे मैच का रुख पूरी तरह भारत के पक्ष में झुक गया। हालांकि उस्मान खान ने 44 रन की संघर्षपूर्ण पारी खेलकर टीम को संभालने की कोशिश की, लेकिन दूसरे छोर से उन्हें कोई ठोस समर्थन नहीं मिला। भारतीय गेंदबाजों ने अनुशासन और रणनीति के साथ गेंदबाजी करते हुए पाकिस्तान के बल्लेबाजों को खुलकर खेलने का कोई अवसर नहीं दिया। अक्षर पटेल, कुलदीप यादव और वरुण चक्रवर्ती ने मध्य ओवरों में शानदार गेंदबाजी करते हुए रन गति पर नियंत्रण बनाए रखा और नियमित अंतराल पर विकेट लेते रहे। उनकी गेंदबाजी में विविधता और सटीकता का अद्भुत संयोजन दिखाई दिया। भारतीय गेंदबाजों के इस सामूहिक प्रयास के सामने पाकिस्तान की पूरी टीम केवल 114 रन पर सिमट गई। यह भारतीय टीम की गेंदबाजी की ताकत और सामूहिक प्रदर्शन का स्पष्ट प्रमाण था। इस जीत ने न केवल भारतीय टीम के आत्मविश्वास को बढ़ाया, बल्कि यह भी साबित किया कि बड़े मुकाबलों में भारतीय खिलाड़ी दबाव को बेहतर तरीके से संभालने की क्षमता रखते हैं।

इस जीत के साथ भारत ने सुपर-8 चरण में शानदार प्रवेश किया और ग्रुप में शीर्ष स्थान हासिल किया। इससे पहले भारत ने अमेरिका और नामीबिया के खिलाफ भी प्रभावशाली जीत दर्ज की थी, जिससे टीम का मनोबल पहले से ही ऊंचा था। पाकिस्तान के खिलाफ इस बड़ी जीत ने भारतीय टीम की स्थिति को और मजबूत कर दिया और यह संकेत दिया कि टीम इस टूर्नामेंट में खिताब जीतने की प्रबल दावेदार है।

भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मुकाबले हमेशा से रोमांच और भावनाओं से भरे होते हैं, लेकिन इस मुकाबले में भारत का प्रदर्शन पूरी तरह एकतरफा रहा। 'सूर्या सेना' ने जिस आत्मविश्वास, रणनीति और सामूहिक प्रयास का प्रदर्शन किया, वह भारतीय क्रिकेट की नई शक्ति और परिपक्वता को दर्शाता है। यह जीत केवल एक मैच की जीत नहीं, बल्कि भारतीय क्रिकेट के निरंतर विकास और उत्कृष्टता का प्रतीक है।

इस ऐतिहासिक जीत ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि जब भारतीय टीम आत्मविश्वास और एकजुटता के साथ मैदान में उतरती है, तो वह किसी भी चुनौती को पार करने की क्षमता रखती है। कोलंबो की यह जीत भारतीय क्रिकेट के इतिहास में लंबे समय तक याद रखी जाएगी, क्योंकि इसने न केवल एक प्रतिद्वंद्वी को हराया, बल्कि भारतीय क्रिकेट की श्रेष्ठता और गौरव को भी पूरी दुनिया के सामने स्थापित किया।

संपादकीय

नए भारत के शहरों की रूपरेखा: अर्बन चैलेंज फंड से आधुनिक, सक्षम और समृद्ध नगरीय भविष्य की ओर

भारत का भविष्य केवल उसके गाँवों में ही नहीं, बल्कि उसके शहरों की गति, संरचना और क्षमता में भी निहित है। आज के समय में शहर केवल रहने के स्थान नहीं रह गए हैं, बल्कि वे आर्थिक गतिविधियों, नवाचार, रोजगार और आधुनिक जीवनशैली के केंद्र बन चुके हैं। जैसे-जैसे देश की अर्थव्यवस्था विस्तार कर रही है, वैसे-वैसे शहरों पर जनसंख्या और संसाधनों का दबाव भी बढ़ता जा रहा है। इसी वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने शहरों के व्यापक विकास के लिए अर्बन चैलेंज फंड के माध्यम से अगले पांच वर्षों में एक लाख करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता देने का महत्वाकांक्षी निर्णय लिया है। यह कदम न केवल बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारत के नगरीय भविष्य को नए सिरे से परिभाषित करने का प्रयास भी है। शहर किसी भी राष्ट्र की आर्थिक धड़कन होते हैं। उद्योग, व्यापार, सेवा क्षेत्र, तकनीकी नवाचार और रोजगार के अधिकांश अवसर शहरों में ही केंद्रित होते हैं। भारत में भी यही स्थिति है। मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, पुणे और अहमदाबाद जैसे शहर देश की आर्थिक शक्ति के प्रमुख स्तंभ हैं। लेकिन इन शहरों की चमक के पीछे एक कठोर सच्चाई भी छिपी हुई है—अव्यवस्थित विकास, जर्जर बुनियादी ढांचा, यातायात की समस्या, जल संकट, प्रदूषण और अपर्याप्त नागरिक सुविधाएँ। तेजी से बढ़ती आबादी के कारण शहरों की मौजूदा संरचना पर भारी दबाव पड़ रहा है, और यदि इस दिशा में समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो यह समस्या और गंभीर हो सकती है। अर्बन चैलेंज फंड इसी चुनौती का समाधान प्रस्तुत करने का एक सुनियोजित प्रयास है। इस योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार शहरों के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए परियोजनाओं की लागत का 25 प्रतिशत हिस्सा वहन करेगी, लेकिन इसके साथ एक महत्वपूर्ण शर्त भी जोड़ी गई है। परियोजना के लिए कम से कम 50 प्रतिशत धन बाजार से जुटाया जाना आवश्यक होगा, जबकि शेष 25 प्रतिशत राशि राज्य सरकारों या स्थानीय निकायों द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी। यह व्यवस्था इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इससे परियोजनाओं में वित्तीय अनुशासन और जवाबदेही सुनिश्चित होगी। जब राज्य सरकारें, स्थानीय निकाय और बाजार तीनों मिलकर निवेश करेंगे, तो परियोजनाओं के सफल और प्रभावी कार्यान्वयन की संभावना अधिक होगी। यह योजना इस दृष्टिकोण को भी दर्शाती है कि सरकार केवल वित्तीय सहायता देने तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि वह एक ऐसी व्यवस्था बनाना चाहती है, जिसमें शहर आत्मनिर्भर और वित्तीय रूप से सक्षम बन सकें। बाजार से निवेश जुटाने की शर्त का अर्थ यह है कि शहरों को अपने संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करना होगा और निवेशकों का विश्वास जीतना होगा। इससे न केवल परियोजनाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि शहरों की वित्तीय स्थिति भी मजबूत होगी। सरकार का अनुमान है कि इस एक लाख करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता के माध्यम से लगभग चार लाख करोड़ रुपये की परियोजनाएँ शुरू हो सकती हैं। यह निवेश शहरों की सूरत बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इससे सड़कों का आधुनिकीकरण, सार्वजनिक परिवहन का विस्तार, जल आपूर्ति और सीवरेज व्यवस्था में सुधार, हरित क्षेत्र का विकास, डिजिटल बुनियादी ढांचे का निर्माण और पर्यावरण संरक्षण जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सुधार संभव होगा। यह विकास केवल भौतिक संरचना तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इससे नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार आएगा। हालांकि, यह भी आवश्यक है कि इस योजना को लागू करते समय पूर्व की योजनाओं से सबक लिया जाए। स्मार्ट सिटी योजना एक महत्वाकांक्षी पहल थी, लेकिन कई शहरों में अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सके। इसका मुख्य कारण परियोजनाओं का धीमा कार्यान्वयन, वित्तीय और प्रशासनिक चुनौतियाँ, और समन्वय की कमी थी। अर्बन चैलेंज फंड के माध्यम से इन कमियों को दूर करने का प्रयास किया गया है। बाजार से निवेश जुटाने की अनिवार्यता और राज्यों की सक्रिय भागीदारी इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं।भारत में शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है। वर्तमान में देश की लगभग 35 प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है, और आने वाले वर्षों में यह संख्या 50 प्रतिशत के करीब पहुँच सकती है। इसका अर्थ है कि करोड़ों लोग बेहतर रोजगार, शिक्षा और जीवन की तलाश में शहरों की ओर पलायन करेंगे। इस स्थिति में शहरों को केवल वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार नहीं, बल्कि भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर विकसित करना होगा। यदि शहरों की योजना दीर्घकालिक दृष्टिकोण से नहीं बनाई गई, तो आने वाले समय में समस्याएँ और जटिल हो सकती हैं।

पेड़ों को ज़िंदा रखने की हरी-भरी तकनीक

> कोयंबटूर की जनता ने तय कर लिया कि जब भी कोई ऐसी विकास परियोजना लागू होगी तो जद में आ रहे सारे पेड़ों को स्कूल, पार्क, मंदिर परिसर या किसी ग्रीन बफर ज़ोन में स्थानांतरित किया जाएगा। फलतः कुछ ही सालों में 5,000 पेड़ स्थानांतरित किए गए। इनमें 85 फीसद पेड़ लहलहा रहे हैं।

बेशक, हरियाली खुदा की सबसे बड़ी नेमतों में से एक है। इसी से जीवन में आशा, उमंग और ताज़गी जैसे भाव जागते हैं। सड़क चौड़ीकरण, हाईवे निर्माण या विकास की किसी दूसरी परियोजनाओं के लिए जब पेड़ रुकावट बन जाते हैं तो उन्हें काटने का दर्द अब हर नागरिक को समझ में आने लगा है। तमिलनाडु के कोयंबटूर शहर के लोगों को तब बहुत दुख हुआ जब सड़क चौड़ीकरण की वजह से 7,600 पेड़ों को खत्म कर दिया था। यह दुख इतना गहरा था कि वहां की कोयंबटूर की जनता ने तय कर लिया कि जब भी कोई ऐसी विकास परियोजना लागू होगी तो जद में आ रहे सारे पेड़ों को स्कूल, पार्क, मंदिर परिसर या किसी ग्रीन बफर ज़ोन में स्थानांतरित किया जाएगा। फलतः कुछ ही सालों में 5,000 पेड़ स्थानांतरित किए गए। सुखद परिणाम यह आया कि इनमें 85 फीसद पेड़ लहलहा रहे हैं यानी पेड़ों को नई जगह रास आ गई है। एक स्वचेतना अभियान यह भी सफल हो रहा कि लोगों ने अपने लिए एक नियम बनाया कि हर कटने वाले पेड़ के बदले लोग दस पौधे लगा रहे तथा उसकी देखभाल का जिम्मा भी खुद ही ले रहे।

इसी तरह पेड़ों को बचाने के कई छोटे-छोटे ही सही अभियान में लोगों की रुचि बढ़ती जा रही। पेड़ों के कटने से दुखी हैदराबाद के रामचंद्र अप्पारी ने भी ट्री ट्रांसलोकेटिंग तकनीक का इस्तेमाल किया तथा इसी तकनीक से वे हैदराबाद के करीब पांच हजार पेड़ों को नई जगह दे चुके हैं। उनकी कंपनी ग्रीन मॉर्निंग हॉर्टिकल्चर सन् 2010 से काम कर रही है। वे कहते हैं वर्ष 2008 में हैदराबाद की सड़कों को चौड़ी करने के लिए पेड़ कटने लगे तब उन्हें बहुत दुख हुआ। तब ऑस्ट्रेलिया में रह रहे अपने दोस्त से पेड़ों को स्थानांतरित किए जाने के उपायों पर पूछा। बस तभी से अब अपनी कंपनी के मार्फत सात हजार से ज्यादा पेड़ों को नया जीवन दे चुके हैं।

दरअसल, एक पेड़ को शिफ्ट करने की लागत दस हजार रुपये से लेकर डेढ़ लाख रुपये तक आती है। वर्ष 2010 में स्थापित उनकी कंपनी ग्रीन मॉर्निंग हॉर्टिकल्चर का टर्न ओवर लगातार बढ़ रहा है। वे कहते हैं हर शहर में प्रशासन को पेड़ों को स्थानांतरित करने के टेंडर निकालने चाहिए तथा इस तकनीक को बढ़ाना चाहिए। कम होते पेड़ों के लिए यह तकनीक वरदान साबित होगी। हैदराबाद के ही वट फाउंडेशन के प्रमुख पेडि रेड्डी वर्ष 2010 से पेड़ बचाने का काम कर रहे हैं। पेड़ों के प्रति इतना लगाव है कि अब तक करीब 2200 पेड़ों को नया जीवन दे चुके हैं।

नेचर जर्नल की रिपोर्ट के अनुसार मानव सभ्यता की शुरुआत से मौजूदा पेड़ों की संख्या में अब तक 46 फ़ीसदी की कमी आ चुकी है। दुनियाभर में हर साल दस अरब पेड़ काटे जा रहे हैं जबकि हर साल सिर्फ पांच अरब पेड़ ही लगाए जा रहे है। चिंता की बात यह भी है कि हर दो सेकंड में एक फुटबॉल के मैदान जितना जंगल काटा जा रहा है। अकेले भारत में दस लाख हेक्टेयर क्षेत्र में फैले जंगल कट रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग तथा प्रदूषण की मार झेलते शहरों के लिए पेड़ों की कमी भी जिम्मेदार है। हमारे शास्त्रों में भी लिखा गया है कि एक पेड़ लगाना सौ गायों का दान देने के समान है। पद्मपुराण में जिक्र है कि जलाशय के निकट पीपल का पेड़ लगाने से व्यक्ति को सैकड़ों यज्ञों के बराबर पुण्य की प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि पेड़ों की कतार धूल मिट्टी को 75 फीसद तक कम कर देती है और 50 फीसदी तक शोर को कम करती है। जो इलाका पेड़ों से घिरा होता है वह दूसरे दूसरे इलाकों की तुलना में 9 डिग्री ठंडा रहता है। वहां का एक पेड़ इतनी ठंडक पैदा करता है जितना एक एसी दस कमरों में 20 घंटों तक चलने पर करता है। कम होते पेड़ों की वजह से कई दुष्प्रभाव होते हैं, जिसमें प्राकृतिक बाधाएं भी शामिल हैं। वनों की कटाई की वजह से भूमि का क्षरण होता है क्योंकि वृक्ष पहाड़ियों की सतह को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वनों के विनाश के कारण वन्यजीव खत्म हो रहे हैं। पेड़ों की कई प्रजातियां लुप्त होने की कगार पर हैं तथा कुछ तो लुप्त हो गई हैं। वनों की कटाई से वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। बारिश भी अनियमित हो जाती है। इन सबके कारण 'ग्लोबल वार्मिंग' में इजाफा होता है। रेगिस्तान फैल रहा है। नदियों का पानी उथला कम, गहरा तथा प्रदूषित हो रहा है क्योंकि उनके किनारों और पहाड़ों पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। जंगल के लिए आदिवासियों का अस्तित्व आवश्यक है। जंगल का उपयोग कैसे करना है आदिवासियों को इसकी पूरी जानकारी रहती है क्योंकि वन संरक्षण के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान होता है। पौधारोपण की कमी के कारण इस अनमोल प्राकृतिक संपत्ति का तेजी से क्षरण हो रहा है, जो जीवन और पर्यावरण के संतुलन को खराब कर रहा है। जंगल की कटाई के कारण जंगली जानवर गांवों में शरण ले रहे हैं। जोधपुर के खेजडली गांव में 230 वर्ष पूर्व 363 लोगों ने पेड़ों को बचाने के लिए अपनी जान तक दे दी थी। तब से लेकर आज तक उस गांव में बलिदान दिवस मनाया जाता है। इसके तहत वहां मेला लगता है, जिसमें विश्नोई समाज के हजारों लोग शिरकत करते हैं तथा बलिदानियों को श्रद्धांजलि देते हैं।

वैसे भारत में कुछ साल पहले 'चिपको आंदोलन' काफी चर्चित हुआ था, जिसके अगुवा सुंदरलाल बहुगुणा थे। दरअसल, यह आंदोलन इसलिए प्रारम्भ किया गया था कि भारत के उत्तरी क्षेत्र में सरकार ने पेड़ों की अंधाधुंध कटाई प्रारम्भ कर दी थी। सुंदरलाल बहुगुणा ने सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणों को एकत्र किया और इनमें से एक ग्रामीण एक पेड़ से चिपक गया ताकि उसे काटा न जा सके। इस आंदोलन को काफी सफलता मिली थी।

प्रेरणा

कल्पना और साहस से नियति को बदलने की अद्भुत कला

मनुष्य का जीवन परिस्थितियों का परिणाम नहीं, बल्कि उसकी कल्पना, साहस और दृष्टिकोण का प्रतिबिंब होता है। जो व्यक्ति कठिनाइयों के अंधकार में भी संभावनाओं की रोशनी देख लेता है, वही अपने जीवन को असाधारण बना देता है। इसका सबसे प्रेरणादायक उदाहरण हैं चार्ली चैपलिन, जिनका जीवन इस सत्य का जीवंत प्रमाण है कि अभाव, पीड़ा और संघर्ष भी महानता की सीढ़ियां बन सकते हैं, यदि व्यक्ति के भीतर कल्पना की उड़ान और साहस की आग जीवित हो।

चैपलिन का बचपन सुख-सुविधाओं से नहीं, बल्कि अभाव और अनिश्चितता से भरा हुआ था। उनका संसार केवल उनकी मां और बड़े भाई तक सीमित था। आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि कई बार उन्हें भूखे पेट ही रात बितानी पड़ती थी। लेकिन इन कठिन परिस्थितियों के बीच उनकी मां हाना ने उन्हें एक अनमोल उपहार दिया—कल्पना की शक्ति। जब जीवन में वास्तविक खुशियों का अभाव था, तब उन्होंने अपने बच्चों को सिखाया कि मन की दुनिया में खुशियों का सृजन किया जा सकता है। वे खिड़की के पास बैठकर राह चलते लोगों को देखतीं और उनके हावभाव, चाल और व्यक्तित्व के आधार पर कहानियां गढ़तीं। यह केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि जीवन को देखने का एक नया दृष्टिकोण था।

यही वह क्षण थे, जब चैपलिन ने सीखा कि जीवन केवल वही नहीं है, जो आंखों से दिखता है, बल्कि वह भी है, जिसे मन की आंखों से महसूस किया जाता है। उन्होंने समझा कि कल्पना केवल बच्चों का खेल नहीं, बल्कि एक ऐसी शक्ति है, जो जीवन की सबसे कठिन वास्तविकताओं को भी सुंदर बना सकती है। जब जेब खाली होती है, तब कल्पना ही मन को समृद्ध बना सकती है। यही कारण है कि उन्होंने कभी अपनी गरीबी को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। उन्होंने अपनी परिस्थितियों को अपने सपनों की सीमा नहीं बनने दिया।

जीवन में साहस का महत्व भी उतना ही गहरा है। साहस केवल युद्ध के मैदान में नहीं, बल्कि जीवन की रोजमर्रा की चुनौतियों का सामना करने में भी आवश्यक होता है। चैपलिन ने बचपन से ही संघर्ष करना सीखा। उन्होंने अखबार बेचे, छोटे-मोटे काम किए, और हर दिन अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष किया। लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने अपने भीतर के कलाकार को जीवित रखा। वे जानते थे कि यदि वे डर के सामने झुक गए, तो उनका जीवन भीड़ में खो जाएगा। इसलिए उन्होंने डर को अपनी कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी ताकत बना लिया। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि भय केवल मन की एक स्थिति है। जब हम डरते हैं, तो हम अपनी संभावनाओं को सीमित कर देते हैं। लेकिन जब हम साहस के साथ आगे बढ़ते हैं, तो असंभव भी संभव हो जाता है। चैपलिन ने अपने जीवन में यही किया। उन्होंने अपनी पीड़ा को कला में बदल दिया, अपने आंसुओं को मुस्कान में बदल दिया, और अपने संघर्ष को सफलता की कहानी बना दिया।

कल्पना और साहस का यह संगम ही उन्हें दुनिया का सबसे प्रिय कलाकार बना गया। उन्होंने अपने अभिनय से लोगों को केवल हंसाया नहीं, बल्कि जीवन का दर्शन भी सिखाया। उनकी हर मुस्कान के पीछे एक गहरा संदेश छिपा होता था—कि जीवन चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, उसमें खुशी खोजी जा सकती है। उनकी कला यह बताती है कि सच्ची खुशी बाहरी परिस्थितियों में नहीं, बल्कि हमारे दृष्टिकोण में होती है।

जीवन में कई बार ऐसा समय आता है, जब सब कुछ निराशाजनक लगता है। जब भविष्य अंधकारमय प्रतीत होता है और हर रास्ता बंद नजर आता है। ऐसे समय में अधिकांश लोग हार मान लेते हैं। लेकिन जो व्यक्ति अपनी कल्पना और साहस को जीवित रखता है, वह अंधकार में भी प्रकाश खोज लेता है। चैपलिन ने यही किया। उन्होंने अपने जीवन की कठिनाइयों को अपने सपनों की हत्या नहीं करने दी। उन्होंने उन्हें अपनी प्रेरणा बना लिया। उनका यह विश्वास कि "अगर आप नीचे देखेंगे, तो कभी भी इंद्रधनुष नहीं देख पाएंगे," केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि जीवन का गहरा सत्य है। जब हम केवल अपनी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हमें केवल अंधकार दिखाई देता है। लेकिन जब हम अपने दृष्टिकोण को ऊपर उठाते हैं, तो हमें संभावनाओं का इंद्रधनुष दिखाई देता है। यह दृष्टिकोण ही जीवन को बदल देता है।

जीवन का एक और महत्वपूर्ण सत्य यह है कि कुछ भी स्थायी नहीं होता। न सुख, न दुख। कठिनाइयां भी अस्थायी होती हैं। लेकिन जब हम कठिनाइयों से डरते हैं, तो वे हमें स्थायी प्रतीत होती हैं। जब हम उनका सामना साहस के साथ करते हैं, तो वे धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं। चैपलिन ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, वे स्थायी नहीं होतीं। स्थायी केवल हमारी इच्छाशक्ति और हमारे सपने होते हैं।

उनकी कहानी हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में सफलता केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि दृष्टिकोण से मिलती है। प्रतिभा कई लोगों के पास होती है, लेकिन जो व्यक्ति अपनी प्रतिभा को साहस और कल्पना के साथ जोड़ देता है, वही असाधारण बनता है। चैपलिन ने अपनी कल्पना को अपनी ताकत बनाया। उन्होंने अपनी पीड़ा को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। उन्होंने अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जिया।

आज के समय में, जब लोग छोटी-छोटी समस्याओं से निराश हो जाते हैं, चैपलिन का जीवन हमें यह याद दिलाता है कि जीवन की सबसे बड़ी शक्ति हमारे भीतर ही होती है। हमें केवल उसे पहचानने की आवश्यकता होती है। जब हम अपनी कल्पना को जीवित रखते हैं और अपने साहस को मजबूत करते हैं, तब कोई भी कठिनाई हमें रोक नहीं सकती।

जीवन का सच्चा सौंदर्य इसी में है कि हम हर परिस्थिति में आशा बनाए रखें। जब हम अपनी कल्पना को जीवित रखते हैं, तो हम जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखने लगते हैं। जब हम साहस के साथ आगे बढ़ते हैं, तो हम अपने भाग्य को स्वयं लिखते हैं। चैपलिन का जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि महानता जन्म से नहीं मिलती, बल्कि संघर्ष, कल्पना और साहस से अर्जित की जाती है।

अंततः, उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि जीवन की वास्तविक संपत्ति धन नहीं, बल्कि दृष्टिकोण है। यदि हमारे पास कल्पना है, तो हम अभाव में भी समृद्ध हैं। यदि हमारे पास साहस है, तो हम अकेले होकर भी शक्तिशाली हैं। और यदि हमारे पास आशा है, तो हम अंधकार में भी प्रकाश खोज सकते हैं। यही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है—कि परिस्थितियां हमें परिभाषित नहीं करतीं, बल्कि हमारा साहस और हमारी कल्पना हमें महान बनाती है।

कांग्रेस पर भारी पड़ता राहुल का रवैया, बयानों में तर्क और तथ्य का अभाव

संसद के बजट सत्र में जब राष्ट्रपति के अभिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा शुरू हुई तो राहुल गांधी ने 2020 में गलवन में चीनी सेना के साथ हुई खूनी झड़प के बहाने मोदी सरकार को घेरना आवश्यक समझा। समझना कठिन रहा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलने के बजाय उन्होंने चीन के साथ हुए संघर्ष और तनाव का मुद्दा क्यों उठाया?

उनकी मानें तो उन्होंने इस विषय को इसलिए उठाया, क्योंकि भाजपा सांसद तेजस्वी सूर्या ने कांग्रेस शासन की विफलताओं को रेखांकित किया था और आतंकवाद एवं माओवाद से निपटने में उसकी कमजोर इच्छाशक्ति का उल्लेख किया था। इसे राहुल ने कांग्रेस की देशभक्ति पर सवाल समझा और उसका जवाब देने के लिए वे गलवन संघर्ष के समय जनरल नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक के एक पत्रिका में छपे अंश पढ़ने की कोशिश करने लगे।

जब लोकसभा अध्यक्ष ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी तो वे जनरल नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक की कथित प्रति संसद परिसर में लहराने लगे। राहुल के हिसाब से इस पुस्तक के जो अंश एक पत्रिका में छपे हैं, उनके अनुसार गलवन की घटना के बाद जब चीनी सेना के टैंक भारत की ओर बढ़ रहे थे तो प्रधानमंत्री की ओर से उन्हें स्पष्ट निर्देश नहीं दिए गए।

पता नहीं पत्रिका ने नरवणे की पुस्तक के अंशों की ऐसी व्याख्या कैसे की, क्योंकि वे यही बताते हैं कि प्रधानमंत्री ने उनसे कहा था कि जो उचित समझें, वह करें। आखिर इसमें किसी तरह की अस्पष्टता की गुंजाइश कहां रह जाती है? ध्यान रहे कि खुद जनरल नरवणे कई बार कह चुके हैं कि भारतीय सेनाओं ने चीनी सेनाओं को सबक सिखाया। जहां तक गलवन संघर्ष को लेकर जनरल नरवणे के पुस्तक लिखने की बात है, यह अस्वाभाविक सा है कि कोई सेनाध्यक्ष हालिया सैन्य संघर्ष पर अपने संस्मरण लिखे। इसी कारण रक्षा मंत्रालय ने अभी तक उनकी पुस्तक के प्रकाशन की अनुमति नहीं दी है। इस पुस्तक में क्या लिखा है, इस पर कुछ कहना कठिन है। इस अप्रकाशित पुस्तक के अंश सार्वजनिक कैसे हुए, इसकी दिल्ली पुलिस जांच कर रही है, क्योंकि प्रकाशक का कहना है कि उसकी ओर से जनरल नरवणे की पुस्तक किसी भी रूप में प्रकाशित नहीं हुई है। प्रश्न यह है कि फिर राहुल कौन सी पुस्तक लहराते घूम रहे थे? वे जो भी पुस्तक लिए घूम रहे हों, इसमें संदेह नहीं कि उनकी ओर से यह साबित करने की कोशिश हो रही कि मोदी सरकार सीमाओं की रक्षा और खासकर चीन से निपटने के मामले में कमजोर है। यह एक विडंबना ही है कि इसे प्रचारित करने का काम उस कांग्रेस के नेता कर रहे हैं, जिसका सीमाओं की रक्षा के मामले में रिकार्ड बहुत कमजोर रहा है।

यह तथ्य है कि कांग्रेस शासनकाल में जहां कश्मीर के एक हिस्से पर पाकिस्तान ने कब्जा किया, वहीं चीन ने भी भारत की सैकड़ों वर्ग किमी भूमि हड़पी। यह ठीक है कि तब भारत आज जितना शक्तिशाली नहीं था, पर सब जानते हैं कि कांग्रेस की सरकारों ने बाद में भी पाकिस्तान और चीन के प्रति रक्षात्मक रवैया ही रखा। यह एक स्थापित सत्य है कि पाकिस्तान और चीन से सीमा विवाद कांग्रेस शासन की ही देन हैं।

कांग्रेस सरकारों के बजाय मोदी शासन का रिकार्ड देखें तो साफ पता चलता है कि उसने पाकिस्तान से भी कड़ाई से निपटा और चीन से भी। पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और आपरेशन सिंदूर का असर किसी से छिपा नहीं। इसी तरह सब जानते हैं कि डोकलाम में भारतीय सेना ने चीनी सेना को पीछे हटने पर बाध्य किया और गलवन में संघर्ष के बाद भारत के अडिग रवैये से चीन वार्ता की मेज पर आने के लिए विवश हुआ। यह प्रश्न अपनी जगह है कि आखिर चीन से सीमा विवाद का समाधान कब होगा, लेकिन इसके आधार पर यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि मोदी सरकार भारत की सीमाओं की रक्षा करने में कमजोर है, लेकिन राहुल गांधी लगातार यही साबित करने पर तुले हैं। कभी वे कहते हैं कि मोदी के रहते चीन ने हमारी जमीन कब्जा ली है और कभी कहते हैं कि प्रधानमंत्री चीन से डरते हैं। चीनी सेना के अतिक्रमणकारी रवैये के मामले में राहुल गांधी को यह भूलना नहीं चाहिए कि उसका यह रवैया कांग्रेस के शासनकाल में भी था और तब उसका सामना इतनी दृढ़ता से नहीं किया जा सका।

राहुल गांधी किस तरह खीझे और सत्तापक्ष से चिढ़े रहते हैं, इसका पता इससे चलता है कि संसद परिसर में उन्होंने केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू को गद्दार दोस्त कह दिया। इसके अलावा उन्होंने उन पर यह तंज भी कसा कि अंततः उन्हें कांग्रेस में ही आना होगा। इसी तरह सदन में पीठासीन अधिकारी जगदंबिका पाल से वे यह कह बैठे कि आप हमारी पार्टी के पूर्व सदस्य हैं और मुझे पता है कि आपका दिल हमारी तरफ है। आखिर इसे उनकी अपरिपक्वता न कहा जाए तो क्या कहा जाए?

जब संसद में बजट पर चर्चा शुरू हुई, तब भी राहुल गांधी अकारण गुस्से में दिखे। उन्होंने अमेरिका के साथ होने वाले व्यापार समझौते पर बिना किसी प्रमाण यहां तक कह दिया कि प्रधानमंत्री ने देश को बेचने का काम किया है। उनकी भाव भंगिमा किसी उग्र और हताश युवराज जैसी दिखती है। वे सत्तापक्ष के प्रति हिकारत अधिक दिखाते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि वे सदन में उलटा-सीधा बोलकर चलते बनते हैं। यह उनके अहंकार को ही प्रदर्शित करता है।

उनका उग्र स्वभाव न तो कांग्रेस को कोई सही संदेश देता है और न ही देश की जनता को। वे संसद में बोल रहे हों या किसी रैली में या फिर पत्रकार सम्मेलन में, उनकी उग्रता के साथ उनकी कुंठा भी झलकती है। वे एक कुंठित नेता के रूप में उभर रहे हैं। उनके तीखे-उग्र बयान चर्चा में तो आ जाते हैं, लेकिन वे किसी विमर्श का कारण नहीं बनते, क्योंकि उनमें तर्कों और तथ्यों का अभाव होता है।

अभियान

शिव-शक्ति की दिव्य परवरिश का रहस्य: संतुलन, स्वतंत्रता और प्रेम से संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण

मानव जीवन में माता-पिता का स्थान सृष्टिकर्ता के समान माना गया है, क्योंकि वे केवल शरीर को जन्म नहीं देते, बल्कि आत्मा को संस्कार, दिशा और उद्देश्य भी प्रदान करते हैं। एक बच्चा जब इस संसार में आता है, तो वह एक कोरे कागज के समान होता है, जिस पर माता-पिता के विचार, व्यवहार और जीवन दृष्टि की छाप धीरे-धीरे अंकित होती है। आज के आधुनिक युग में पेरेंटिंग एक चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी बन चुकी है। प्रतिस्पर्धा, तकनीक, बदलते सामाजिक मूल्य और बढ़ती अपेक्षाओं के बीच माता-पिता अक्सर भ्रमित हो जाते हैं कि बच्चों को किस प्रकार मार्गदर्शन दिया जाए। ऐसे समय में भारतीय सनातन परंपरा हमें एक ऐसा दिव्य उदाहरण प्रदान करती है, जो समय, परिस्थिति और युग से परे है। भगवान शिव और माता पार्वती का पारिवारिक जीवन इस सत्य का जीवंत प्रमाण है कि सच्ची परवरिश प्रेम, संतुलन, स्वतंत्रता और विश्वास के आधार पर ही संभव है।

शिव और शक्ति का संबंध केवल एक दांपत्य संबंध नहीं है, बल्कि यह ब्रह्मांडीय संतुलन का प्रतीक है। शिव चेतना हैं और पार्वती ऊर्जा हैं। चेतना और ऊर्जा के इस मिलन से ही सृष्टि का संतुलन बना रहता है। यही संतुलन उनके पारिवारिक जीवन में भी दिखाई देता है। उनकी संतान भगवान गणेश और भगवान कार्तिकेय दोनों अपने-अपने गुणों और व्यक्तित्व में एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। गणेश जी बुद्धि, विवेक, धैर्य और स्थिरता के प्रतीक हैं, जबकि कार्तिकेय जी साहस, गति, नेतृत्व और युद्ध कौशल के प्रतीक हैं। यह अंतर इस बात का संकेत है कि शिव और पार्वती ने अपने बच्चों को किसी एक निश्चित साँचे में ढालने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उन्हें उनकी प्राकृतिक प्रवृत्ति के अनुसार विकसित होने दिया।

यह परवरिश का पहला और सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि हर बच्चा अद्वितीय होता है। आज के समाज में माता-पिता अक्सर अपने बच्चों की तुलना दूसरों से करते हैं। वे चाहते हैं कि उनका बच्चा भी वैसा ही बने जैसा समाज सफल मानता है। लेकिन यह दृष्टिकोण बच्चे के आत्मविश्वास और उसकी मौलिकता को कमजोर कर देता है। शिव और पार्वती ने कभी भी गणेश और कार्तिकेय की तुलना नहीं की। उन्होंने दोनों को उनके अपने गुणों के अनुसार स्वीकार किया और उन्हें वही बनने दिया, जो वे वास्तव में बनना चाहते थे। यह हमें सिखाता है कि माता-पिता का कार्य बच्चों को बदलना नहीं, बल्कि उन्हें समझना और उनका मार्गदर्शन करना है। शिव और पार्वती के जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू है उनका आपसी सम्मान और सहयोग। शिव का स्वभाव वैरागी, शांत और ध्यानमग्न है, जबकि पार्वती का स्वभाव ममतामयी, संवेदनशील और पारिवारिक है। इन दोनों के स्वभाव में स्पष्ट अंतर होने के बावजूद, उनके बीच गहरा सम्मान और समझ है। यही संतुलन उनके परिवार की शक्ति का आधार है। जब माता-पिता एक-दूसरे का सम्मान करते हैं और एकजुट होकर निर्णय लेते हैं, तो बच्चों के भीतर भी सुरक्षा और स्थिरता की भावना विकसित होती है। वे अपने जीवन में संतुलन और सम्मान का महत्व समझते हैं।

परवरिश केवल प्रेम देने का नाम नहीं है, बल्कि यह सही समय पर सही मार्गदर्शन देने की कला भी है। शिव का व्यक्तित्व इस संतुलन का प्रतीक है। वे अत्यंत करुणामयी और सरल हैं, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर वे कठोर भी हो सकते हैं। गणेश जी के जीवन से जुड़ी घटना हमें यह सिखाती है कि माता-पिता भी कभी-कभी गलती कर सकते हैं, लेकिन सच्ची महानता अपनी गलती को स्वीकार करने और उसे सुधारने में है। शिव ने गणेश जी को पुनर्जीवन देकर उन्हें सर्वोच्च सम्मान दिया। यह इस बात का प्रतीक है कि माता-पिता का प्रेम अंततः सबसे बड़ी शक्ति होता है।

परवरिश का एक और गहरा सिद्धांत है बच्चों को स्वतंत्रता देना। शिव और पार्वती ने अपने बच्चों को उनके जीवन का मार्ग स्वयं चुनने की स्वतंत्रता दी। कार्तिकेय जी ने अपने साहस और नेतृत्व के बल पर देवताओं के सेनापति बनने का मार्ग चुना, जबकि गणेश जी ने ज्ञान और बुद्धि का मार्ग अपनाया। माता-पिता ने दोनों के निर्णयों का सम्मान किया। यह हमें सिखाता है कि बच्चों को केवल सुरक्षा देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनने का अवसर देना भी आवश्यक है।

आज के समय में कई माता-पिता अपने बच्चों के जीवन के हर निर्णय को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। वे सोचते हैं कि ऐसा करने से उनका बच्चा सुरक्षित रहेगा, लेकिन वास्तव में इससे बच्चे की स्वतंत्र सोच और आत्मविश्वास कमजोर हो सकता है। शिव और पार्वती का दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि बच्चों को मार्ग दिखाना आवश्यक है, लेकिन उन्हें अपने अनुभवों से सीखने देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। परवरिश का एक और महत्वपूर्ण पहलू है भावनात्मक उपस्थिति। शिव भले ही ध्यान में लीन रहने वाले योगी हैं, लेकिन वे अपने परिवार के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। पार्वती भी अपनी मातृ भूमिका को अत्यंत प्रेम और संवेदनशीलता के साथ निभाती हैं। यह हमें सिखाता है कि बच्चों के लिए माता-पिता की उपस्थिति केवल शारीरिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और मानसिक भी होनी चाहिए। जब बच्चे यह अनुभव करते हैं कि उनके माता-पिता उनके साथ हैं, उन्हें समझते हैं और उनका समर्थन करते हैं, तो उनके भीतर एक गहरा आत्मविश्वास विकसित होता है।

शिव और शक्ति का जीवन यह भी सिखाता है कि सच्ची परवरिश भौतिक सुविधाओं से अधिक आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित होती है। यदि बच्चे को केवल सुविधा दी जाए, लेकिन उसे प्रेम, सम्मान और नैतिकता का ज्ञान न दिया जाए, तो उसका व्यक्तित्व अधूरा रह सकता है। लेकिन यदि बच्चे को सही संस्कार और मूल्य दिए जाएं, तो वह जीवन की हर चुनौती का सामना करने में सक्षम बन सकता है।

शिव और पार्वती का पारिवारिक जीवन संतुलन का जीवन है। यह संतुलन अनुशासन और स्वतंत्रता के बीच, प्रेम और कठोरता के बीच, और मार्गदर्शन और विश्वास के बीच है। यही संतुलन सच्ची पेरेंटिंग का मूल है। माता-पिता को अपने बच्चों के जीवन में मार्गदर्शक बनना चाहिए, लेकिन उन्हें नियंत्रित करने वाला नहीं बनना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों को दिशा देनी चाहिए, लेकिन उनके सपनों को सीमित नहीं करना चाहिए।

आज के युग में, जहाँ बच्चे तकनीक, प्रतिस्पर्धा और सामाजिक दबाव के बीच बड़े हो रहे हैं, वहाँ माता-पिता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उन्हें अपने बच्चों के लिए केवल संरक्षक नहीं, बल्कि प्रेरणा का स्रोत बनना चाहिए। उन्हें अपने व्यवहार से यह सिखाना चाहिए कि जीवन में संतुलन, प्रेम और सम्मान कितना महत्वपूर्ण है।

अंततः, शिव और शक्ति की परवरिश का यह दिव्य उदाहरण हमें यह सिखाता है कि सच्ची पेरेंटिंग केवल बच्चों को बड़ा करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह आत्माओं को जागृत करने की एक पवित्र जिम्मेदारी है। जब माता-पिता अपने बच्चों को प्रेम, स्वतंत्रता, विश्वास और सही मार्गदर्शन देते हैं, तो वे केवल एक सफल व्यक्ति नहीं, बल्कि एक संतुलित, जागरूक और संवेदनशील मनुष्य का निर्माण करते हैं। यही सच्ची परवरिश का सार है, और यही वह मार्ग है, जो बच्चों को न केवल जीवन में सफलता दिलाता है, बल्कि उन्हें एक ऐसा व्यक्तित्व प्रदान करता है, जो स्वयं के साथ-साथ पूरे समाज के लिए भी प्रकाश का स्रोत बन सके।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

भक्ति का मुखौटा और चोरी की साजिशः माताजी के मंदिर में 'श्रद्धालु' बनकर आया युवक दानपात्र लेकर फरार

(जीएनएस)। हीरा नगरी सूरत के डिंडोली क्षेत्र में स्थित माताजी के एक मंदिर में हुई चोरी की घटना ने आस्था, अपराध और मनोविज्ञान के एक अनोखे और चौंकाने वाले संगम को उजागर कर दिया है। यह कोई साधारण चोरी नहीं थी, बल्कि इस घटना ने लोगों को इसलिए अधिक हैरान किया क्योंकि आरोपी ने चोरी से पहले जिस तरह की 'भक्ति' और विनम्रता का प्रदर्शन किया, उसने पूरे घटनाक्रम को रहस्य और विरोधाभास से भर दिया। मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद इस पूरी घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है और लोग इसे देखकर हैरानी, आक्रोश और सवालों के मिश्रित भाव व्यक्त कर रहे हैं।

यह घटना 11 फरवरी की शाम की बताई जा रही है, जब एक अज्ञात युवक मंदिर परिसर में प्रवेश करता है। उसके चेहरे और हावभाव को देखकर यह अनुमान लगाना कठिन था कि वह किसी आपराधिक इरादे से वहां आया है। वह सामान्य श्रद्धालुओं की तरह शांत भाव से मंदिर में दाखिल होता है और सीधे माताजी की मूर्ति के सामने जाकर खड़ा हो जाता है। इसके बाद जो दृश्य सामने आता है, वह किसी भी श्रद्धालु के लिए सामान्य आस्था का प्रतीक प्रतीत होता है। युवक धीरे-धीरे झुकता है, मूर्ति के चरणों में सिर रखता है और गहरी श्रद्धा का प्रदर्शन करता है। इसके बाद वह अपने कान पकड़ता है, जैसे कोई अपनी गलती के लिए क्षमा मांग रहा हो।

सीसीटीवी फुटेज में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि युवक केवल औपचारिक रूप से नहीं, बल्कि पूरी गंभीरता के साथ अपनी 'भक्ति' का प्रदर्शन कर रहा था। वह कुछ क्षणों तक उसी स्थिति में रहता है, मानो किसी आंतरिक अपराधबोध से जूझ रहा हो या किसी अदृश्य शक्ति से क्षमा की याचना कर रहा हो। इसके बाद वह उठता है और फिर से हाथ जोड़कर माताजी के सामने खड़ा हो जाता है। इस दौरान उसके चेहरे पर एक अजीब प्रकार का तनाव और सतर्कता भी देखी जा

सकती है। वह बार-बार मंदिर के चारों ओर नजर घुमाता है, मानो यह सुनिश्चित करना चाहता हो कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है।

यह दृश्य आस्था और अपराध के बीच के उस गहरे मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को दर्शाता है, जिसमें व्यक्ति अपने कृत्य को अंजाम देने से पहले स्वयं को मानसिक रूप से तैयार करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि युवक अपने कृत्य के लिए पहले ही क्षमा मांग लेना चाहता था, जैसे वह अपने अपराध को स्वीकार करते हुए भी उसे करने से स्वयं को रोक नहीं पा रहा था। यह स्थिति मानव मन की जटिलता और नैतिक संघर्ष का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करती है।

कुछ क्षणों तक मंदिर में रुकने और चारों ओर की स्थिति का जायजा लेने के बाद युवक अचानक अपने असली इरादे पर उतर आता है। वह धीरे-धीरे मूर्ति के पास रखी भारी दानपेटी की ओर बढ़ता है। यह वही दानपेटी होती है, जिसमें श्रद्धालु अपनी आस्था और श्रद्धा के प्रतीक के रूप में धन अर्पित करते हैं। युवक एक बार फिर चारों ओर देखता है और जब उसे विश्वास हो जाता है कि आसपास कोई नहीं है, तो वह तुरंत दानपेटी को उठाता है और तेजी से मंदिर से बाहर निकल जाता है। यह पूरा घटनाक्रम कुछ ही सेकंड में संपन्न हो जाता है, लेकिन इसके पीछे की योजना और मानसिक तैयारी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

मंदिर प्रशासन को जब इस चोरी की जानकारी मिली, तो उन्होंने तुरंत डिंडोली पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर सीसीटीवी फुटेज को अपने कब्जे में लिया और जांच शुरू कर दी। फुटेज में आरोपी का चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है, जिससे पुलिस को उम्मीद है कि उसकी पहचान जल्द ही कर ली जाएगी और उसे गिरफ्तार किया जा सकेगा। पुलिस आसपास के क्षेत्रों में लगे अन्य सीसीटीवी कैमरों की भी जांच कर रही है, ताकि आरोपी के आने और जाने के मार्ग का पता लगाया जा सके। इस घटना के सामने आने के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश और हैरानी दोनों देखने को मिल रहे हैं। लोगों का कहना है कि मंदिर जैसे पवित्र स्थान में इस प्रकार की चोरी न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि यह आस्था और धार्मिक भावनाओं का भी अपमान है। कई लोगों ने इस घटना को समाज में नैतिक मूल्यों के गिरते स्तर का संकेत बताया है। उनका मानना है कि जब व्यक्ति अपने अपराध को अंजाम देने से पहले भी भगवान के सामने क्षमा मांगता है, तो यह उसके अंदर के नैतिक संघर्ष को दर्शाता है, लेकिन साथ ही यह भी दिखाता है कि उसने अपने अपराध को रोकने का प्रयास नहीं किया।

यह घटना केवल एक चोरी की वारदात नहीं है, बल्कि यह मानव मन की जटिलता और विरोधाभास का भी प्रतीक है। यह दिखाती है कि व्यक्ति कभी-कभी अपने नैतिक और धार्मिक विश्वासों के बावजूद अपराध करने के लिए प्रेरित हो सकता है। यह आस्था और लालच के बीच के उस संघर्ष को उजागर करती है, जिसमें लालच अक्सर आस्था पर भारी पड़ जाता है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी की पहचान और गिरफ्तारी के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने लोगों से अपील की है कि यदि किसी को आरोपी के बारे में कोई जानकारी हो, तो वे तुरंत पुलिस को सूचित करें। पुलिस को विश्वास है कि जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा और उसे उसके कृत्य के लिए कानून के अनुसार दंडित किया जाएगा।

यह घटना समाज के लिए एक चेतावनी भी है कि केवल बाहरी आचरण से किसी व्यक्ति की वास्तविक मंशा का आकलन करना संभव नहीं है। यह आवश्यक है कि मंदिरों और अन्य धार्मिक स्थलों की सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया जाए, ताकि इस प्रकार की घटनाओं को रोका जा सके। साथ ही, यह घटना हमें यह भी सोचने पर मजबूर करती है कि आस्था का वास्तविक अर्थ केवल पूजा और प्रार्थना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे कर्मों और नैतिक आचरण में भी परिलक्षित होना चाहिए।

मंदिर में हुई इस अनोखी चोरी की घटना ने पूरे शहर में चर्चा का विषय बना दिया है। लोग इस बात पर आश्चर्य व्यक्त कर रहे हैं कि किस प्रकार एक व्यक्ति ने पहले भगवान के सामने सिर झुकाया, क्षमा मांगी और फिर उसी स्थान से चोरी कर ली। यह घटना आस्था और अपराध के उस विरोधाभास को उजागर करती है, जो मानव स्वभाव की जटिलता को दर्शाता है। अब सभी की नजर पुलिस की कार्रवाई पर है और लोग उम्मीद कर रहे हैं कि जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर न्याय के कटघरे में लाया जाएगा।

सड़क से स्टेडियम तक सपनों की उड़ानः सूरत में ISPL सीज़न 3 का ऐतिहासिक समापन और हजारों विद्यार्थियों के जीवन में नई उम्मीद

(जीएनएस)। हीरा नगरी सूरत ने एक बार फिर खेल और सामाजिक चेतना का ऐसा संगम देखा, जिसने न केवल क्रिकेट प्रेमियों के दिलों को उत्साह से भर दिया, बल्कि हजारों बच्चों के सपनों को भी नई दिशा दी। इंडियन स्ट्रीट प्रीमियर लीग, जिसे देश के सबसे लोकप्रिय और तेजी से उभरते टेनिस-बॉल T10 क्रिकेट टूर्नामेंटों में गिना जाता है, ने अपने तीसरे सीज़न का भव्य समापन सूरत में किया। 29 दिनों तक चले इस रोमांचक टूर्नामेंट ने शहर के खेल प्रेमियों को एक नया अनुभव दिया और यह साबित किया कि क्रिकेट केवल एक खेल नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने और नई पीढ़ी को प्रेरित करने का सशक्त माध्यम भी है। इस बार का सीज़न कई मायनों में ऐतिहासिक रहा, क्योंकि पहली बार इसका आयोजन लालभाई कॉन्ट्रैक्टर स्टेडियम में किया गया। यह स्टेडियम, जो पहले से ही शहर के खेल इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है, ISPL के आयोजन के साथ एक नई पहचान और गौरव से जुड़ गया। जैसे ही टूर्नामेंट की शुरुआत हुई, स्टेडियम में हर दिन दर्शकों की भारी भीड़ उमड़ने

लगी। युवा, बच्चे, परिवार और बुजुर्ग सभी इस अनोखे क्रिकेट उत्सव का हिस्सा बनने के लिए उत्साहित नजर आए। मैदान पर खिलाड़ियों की ऊर्जा और दर्शकों का उत्साह मिलकर ऐसा वातावरण बना रहे थे, जो किसी बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन से कम नहीं था।

इस टूर्नामेंट की सबसे खास बात यह रही कि यह केवल प्रतिस्पर्धा और मनोरंजन तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके पीछे एक गहरा सामाजिक उद्देश्य भी था। इंडियन स्ट्रीट प्रीमियर लीग का मूल विचार भारत की गलियों और मोहल्लों में छिपी प्रतिभाओं को एक बड़ा मंच देना है, ताकि वे अपने सपनों को साकार कर सकें। देश के कई महान क्रिकेटरों की शुरुआत भी सड़कों और छोटे मैदानों से ही हुई थी, और ISPL उसी परंपरा को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। यह लीग उन युवाओं के लिए उम्मीद की किरण बनकर उभरी है, जिनके पास प्रतिभा तो है, लेकिन संसाधनों और अवसरों की कमी के कारण वे आगे नहीं बढ़ पाते। समापन समारोह के दौरान लीग के कमिश्नर और कोर कमेटी सदस्य सूरज सामत ने सूरत शहर के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस शहर ने जिस गर्मजोशी और उत्साह के साथ इस आयोजन का स्वागत किया, वह अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा कि ISPL केवल एक क्रिकेट लीग नहीं, बल्कि एक सामाजिक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य समाज के हर वर्ग तक खेल की शक्ति को पहुंचाना है। उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया कि लीग का मिशन केवल खिलाड़ियों को मंच देना नहीं, बल्कि समाज को कुछ लौटाना भी है, और इसी सोच के तहत कम्युनिटी आउटरीच पहल की शुरुआत की गई।

जिम्मेदार ड्राइविंग की ओर सूरत का संकल्पः सड़क सुरक्षा जागरूकता शिविर ने नागरिकों को दिया जीवन बचाने का संदेश

(जीएनएस)। हीरा नगरी सूरत में रविवार का दिन केवल एक नए पेट्रोल पंप के उद्घाटन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह दिन सड़क सुरक्षा, जिम्मेदार नागरिकता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामूहिक जागरूकता का प्रतीक बन गया। इको भारत और मणिपाल पेट्रोलियम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित भव्य सड़क सुरक्षा जागरूकता शिविर ने यह साबित कर दिया कि जब प्रशासन, कॉर्पोरेट जगत और समाज एक साथ आते हैं, तो सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में मजबूत कदम उठाए जा सकते हैं। इस कार्यक्रम का आयोजन शहर में नए इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप के उद्घाटन के उपलक्ष्य में किया गया, लेकिन इसका वास्तविक उद्देश्य समाज में सुरक्षित और जिम्मेदार ड्राइविंग की संस्कृति को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ अत्यंत गरिमामय वातावरण में हुआ, जहां मुख्य अतिथि के रूप में एम नागराजन, जो सूरत महानगरपालिका के आयुक्त हैं, ने रिबन काटकर इस महत्वपूर्ण पहल की शुरुआत की। उनके साथ मनुभाई पटेल, इंडियन ऑयल सूरत के समन्वयक अजय प्रताप सिंह तथा मणिपाल पेट्रोलियम की प्रबंध निदेशक डॉ. हेमा राउत भी उपस्थित

रहे। कार्यक्रम में कई गणमान्य नागरिक, सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ और स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में शामिल हुए, जिससे यह आयोजन एक सामूहिक जनजागरूकता अभियान का रूप ले सका।

अपने संबोधन में आयुक्त एम नागराजन ने सड़क सुरक्षा के महत्व पर विशेष जोर देते हुए कहा कि शहर का विकास केवल इमारतों, सड़कों और सुविधाओं के विस्तार से नहीं होता, बल्कि नागरिकों की सुरक्षा और जीवन की गुणवत्ता से भी होता है। उन्होंने कहा कि सूरत तेजी से विकसित हो रहा शहर है और ऐसे में यातायात का दबाव भी बढ़ रहा है। इस स्थिति में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता और नियमों का पालन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। उन्होंने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम नागरिकों को जिम्मेदारी का एहसास कराते हैं और उन्हें सुरक्षित जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

उधना के विधायक मनुभाई पटेल ने भी अपने विचार साझा करते हुए युवाओं से विशेष अपील की कि वे यातायात नियमों का पालन करें और हेलमेट तथा सीट बेल्ट को अपनी आदत का हिस्सा बनाएं। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली अधिकांश मौतें लापरवाही और नियमों की अनदेखी के कारण होती हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति थोड़ी सी सावधानी बरते और नियमों का पालन करे, तो कई जिंदगियां बचाई जा सकती हैं। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सड़क सुरक्षा केवल सरकार या प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

शिविर के दौरान सड़क सुरक्षा विशेषज्ञों ने उपस्थित लोगों को यातायात नियमों की बारीकियों से अवगत कराया। उन्होंने यातायात संकेतों की पहचान, जेब्रा क्रॉसिंग के महत्व, सुरक्षित गति बनाए रखने और वाहन चलाते समय सतर्क रहने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। पेट्रोल पंप परिसर में मोबाइल फोन का उपयोग न करने, इंजन बंद रखने और ईंधन भरवाते समय आवश्यक सावधानियां बरतने का लाइव प्रदर्शन भी किया गया। इस प्रदर्शन ने लोगों को यह समझने में मदद की कि छोटी-छोटी सावधानियां किस प्रकार बड़े हादसों को टाल सकती हैं।

कार्यक्रम के दौरान वाहन चालकों को रिफ्लेक्टिव स्टिकर और सड़क सुरक्षा मार्गदर्शिका भी वितरित की गई। इन स्टिकरों का उद्देश्य रात के समय वाहनों की दृश्यता बढ़ाना है, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना कम हो सके। मार्गदर्शिका में सड़क सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण नियमों और सुझावों को सरल भाषा में समझाया गया था, ताकि लोग उन्हें आसानी से समझकर अपने जीवन में लागू कर सकें।

इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया गया। इको भारत की ओर से पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें उपस्थित अतिथियों और नागरिकों ने भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। यह पहल इस बात का प्रतीक थी कि सड़क सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, क्योंकि सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण ही स्वस्थ समाज की नींव होता है।

मणिपाल पेट्रोलियम के निदेशक महेंद्र राउत ने कहा कि सड़क सुरक्षा केवल नियमों का पालन करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवन शैली है, जिसे अपनाकर हम स्वयं और दूसरों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य दुर्घटना-मुक्त भारत के निर्माण में योगदान देना है और इस दिशा में इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इको भारत के संस्थापक सम्मत सारस्वत बामनवाली ने बताया कि उनकी संस्था का उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को कम करना और लोगों में जागरूकता फैलाना है। उन्होंने कहा कि जब लोग जागरूक होते हैं, तो वे न केवल स्वयं सुरक्षित रहते हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी सुरक्षा का उदाहरण बनते हैं।

बजट की कसौटी पर सूरत का भविष्यः विकास राजनीति और जनअपेक्षाओं के बीच निर्णायक दो दिन

(जीएनएस)। हीरा नगरी के नाम से प्रसिद्ध सूरत एक बार फिर अपने भविष्य की दिशा तय करने वाले महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है, जहां शहर के विकास, नागरिक सुविधाओं और राजनीतिक रणनीतियों का संतुलन आने वाले दो दिनों में तय होगा। सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के वर्ष 2026-27 के लिए प्रस्तावित 11,301 करोड़ रुपये के विशाल बजट पर सोमवार से शुरू होने वाली जनरल बोर्ड की बैठक को केवल एक प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि शहर के आने वाले वर्षों की विकास रूपरेखा तय करने वाली ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में देखा जा रहा है। सुबह 10 बजे से शुरू होने वाली यह मैराथन बैठक लगातार दो दिनों तक चलेगी, जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष के सभी पार्षदों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई है, जिससे यह स्पष्ट हो गया है कि यह चर्चा केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि गहन राजनीतिक और प्रशासनिक विमर्श का मंच बनने जा रही है। यह बजट अपने आप में कई मायनों में विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह मौजूदा पार्षदों के कार्यकाल का अंतिम बजट है और इसी कारण इसमें राजनीतिक दृष्टि से भी कई संदेश छिपे हुए हैं। पांच वर्षों तक शहर के विकास और प्रशासनिक निर्णयों में भूमिका निभाने वाले जनप्रतिनिधियों के लिए यह आखिरी अवसर होगा जब वे अपने वार्डों की आवश्यकताओं, जनता की अपेक्षाओं और अधूरे विकास कार्यों को जोरदार तरीके से सदन के सामने रख सकेंगे। यही कारण है कि इस बार की बैठक को लेकर शहर के राजनीतिक और सामाजिक हलकों में असाधारण उत्सुकता और सक्रियता देखने को मिल रही है।

नगर आयुक्त द्वारा प्रस्तुत मूल बजट में स्टैंडिंग कमेटी ने कई महत्वपूर्ण संशोधन करते हुए इसे अंतिम रूप दिया है। इन संशोधनों का मुख्य उद्देश्य शहर की बढ़ती जनसंख्या, तेजी से फैलते शहरी क्षेत्रों और आधुनिक सुविधाओं की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए विकास योजनाओं को अधिक प्रभावी और व्यापक बनाना है। विशेष रूप से हाल ही में नगर निगम की सीमा में शामिल किए गए नए क्षेत्रों में सड़क, पानी, ड्रेनेज, स्ट्रीट लाइट और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार पर विशेष जोर दिया गया है। इन क्षेत्रों के निवासियों की लंबे समय से चली आ रही मांगों को इस बजट में शामिल कर उन्हें मुख्यधारा के शहरी विकास से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

सत्तारूढ़ पक्ष इस बजट को शहर के भविष्य के लिए एक मजबूत आधार के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। उनका दावा है कि यह बजट केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं, बल्कि शहर की आर्थिक, सामाजिक और भौतिक संरचना को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की ठोस योजना है। सत्तापक्ष के नेताओं का कहना है कि इस बजट के माध्यम से सूरत को और अधिक आधुनिक, सुरक्षित और सुविधाजनक शहर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जाएंगे। उनका यह भी मानना है कि शहर की पहचान को वैश्विक स्तर पर मजबूत करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश अत्यंत आवश्यक है और यह बजट उसी दिशा में एक निर्णायक पहल है।

दूसरी ओर, विपक्ष इस बजट को लेकर पूरी तरह से सतर्क और आक्रामक रुख अपनाने की तैयारी में है। विपक्षी नेताओं का कहना है कि पिछले वर्षों में कई विकास परियोजनाएं अधूरी रह गई हैं और कई योजनाओं में पारदर्शिता की कमी रही है। उनका आरोप है कि स्मार्ट सिटी और अन्य विकास योजनाओं के नाम पर भारी खर्च किया गया, लेकिन उसका अपेक्षित लाभ आम नागरिकों तक पूरी तरह नहीं पहुंच पाया। इसी कारण विपक्ष ने पहले ही रणनीति तैयार कर ली है कि वे बजट की हर मद का बारीकी से विश्लेषण करेंगे और जहां भी उन्हें अनियमितता या प्राथमिकताओं में असंतुलन दिखाई देगा, वहां वे मजबूती से अपनी आवाज उठाएंगे। इस बार की बैठक में राजनीतिक गर्माहट और तीखी बहस की पूरी संभावना है, क्योंकि यह केवल बजट पारित करने का मामला नहीं, बल्कि आगामी चुनावों से पहले अपनी राजनीतिक स्थिति मजबूत करने का भी अवसर है। पार्षद अपने-अपने वार्डों की समस्याओं जैसे जलभराव, ट्रैफिक जाम, कचरा प्रबंधन, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं और शहरी नियोजन से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाने की तैयारी में हैं। कई पार्षदों ने पहले ही अपने क्षेत्रों की समस्याओं का विस्तृत विवरण तैयार कर लिया है, जिसे वे सदन में प्रस्तुत करेंगे।

नगर निगम प्रशासन के लिए भी यह बैठक एक महत्वपूर्ण परीक्षा होगी, क्योंकि उन्हें यह साबित करना होगा कि बजट में प्रस्तावित योजनाएं केवल कागजों तक सीमित नहीं रहेंगी, बल्कि वास्तविक धरातल पर उनका प्रभाव दिखाई देगा। प्रशासनिक अधिकारियों को न केवल बजट के प्रावधानों का स्पष्ट और संतोषजनक स्पष्टीकरण देना होगा, बल्कि यह भी बताना होगा कि पिछले बजट में घोषित योजनाओं की वर्तमान स्थिति क्या है और उन्हें समय पर पूरा करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं।

शहर के नागरिक भी इस बजट चर्चा को लेकर काफी उत्सुक हैं, क्योंकि इसका सीधा प्रभाव उनके दैनिक जीवन पर पड़ने वाला है। बेहतर सड़कें, स्वच्छ जल आपूर्ति, प्रभावी कचरा प्रबंधन, आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं और सुरक्षित यातायात व्यवस्था जैसी सुविधाएं नागरिकों की प्राथमिक आवश्यकताएं हैं और वे चाहते हैं कि नगर निगम इन मुद्दों पर गंभीरता से काम करे। नागरिक संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी अपनी अपेक्षाएं और सुझाव नगर निगम के सामने रखे हैं, जिससे यह स्पष्ट हो गया है कि शहर की जनता विकास को लेकर सजग और सक्रिय है।

पिछले वर्षों के अनुभवों को देखते हुए यह भी संभावना जताई जा रही है कि बजट चर्चा के दौरान कई बार सदन का माहौल तनावपूर्ण हो सकता है। आरोप-प्रत्यारोप, बहस और विरोध की स्थिति बन सकती है, लेकिन यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा है। महत्वपूर्ण बात यह होगी कि अंततः सभी पक्ष शहर के हित को सर्वोपरि रखते हुए एक संतुलित और प्रभावी बजट को मंजूरी दें।

दो दिवसीय इस विस्तृत चर्चा के समापन के बाद बजट को बहुमत से पारित किए जाने की संभावना प्रबल मानी जा रही है। इसके साथ ही शहर के विकास की दिशा और प्राथमिकताएं औपचारिक रूप से तय हो जाएंगी। यह बजट केवल वित्तीय दस्तावेज नहीं, बल्कि सूरत के भविष्य की रूपरेखा है, जो यह तय करेगा कि आने वाले वर्षों में शहर किस दिशा में आगे बढ़ेगा और नागरिकों को किस स्तर की सुविधाएं प्राप्त होंगी।

इस ऐतिहासिक प्रक्रिया के माध्यम से यह स्पष्ट हो जाएगा कि सूरत केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक दक्षता और विकासात्मक दृष्टिकोण से भी देश के अग्रणी शहरों में अपनी पहचान को और मजबूत करने के लिए तैयार है। आने वाले दो दिन न केवल नगर निगम के लिए, बल्कि पूरे शहर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होंगे, क्योंकि इन्हीं दो दिनों में लिए गए निर्णय आने वाले वर्षों तक शहर की दिशा और दशा को प्रभावित करेंगे।

युवाओं ने समझा देश की आर्थिक दिशा का रोडमैपः अग्रवाल विद्या विहार महाविद्यालय में "बजट टॉक ऐट कैंपस" बना ज्ञान और जागरूकता का सशक्त मंच

(जीएनएस)। हीरा नगरी सूरत के शैक्षणिक वातावरण में उस समय नई ऊर्जा और बौद्धिक उत्साह का संचार हुआ, जब वेसू स्थित अग्रवाल विद्या विहार अंग्रेजी माध्यम महाविद्यालय में "बजट टॉक ऐट कैंपस" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि युवाओं को देश की आर्थिक नीतियों, विकास की प्राथमिकताओं और भविष्य की दिशा से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास बन गया। विद्यार्थियों ने इस अवसर पर केंद्रीय बजट 2026 के विभिन्न पहलुओं को समझा और यह जाना कि सरकार की आर्थिक योजनाएं किस प्रकार देश के विकास और उनके भविष्य को प्रभावित करेंगी। महाविद्यालय के ट्रस्ट अध्यक्ष संजय सरावगी ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के युवा ही देश के भविष्य के निर्माता हैं और उन्हें देश की आर्थिक नीतियों और बजट की समझ होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि बजट केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं होता, बल्कि यह देश के विकास की दिशा और प्राथमिकताओं का स्पष्ट संकेत देता है। इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों को जागरूक नागरिक बनने और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को समझने के लिए प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. श्रीनिवास राव ने अपने प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक संबोधन में केंद्रीय बजट 2026 के प्रमुख प्रावधानों की विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने बताया कि इस वर्ष का बजट "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना पर आधारित है, जिसका लक्ष्य भारत को वर्ष 2047 तक विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना है। उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया कि सरकार ने शिक्षा, अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और डिजिटल विकास को प्राथमिकता दी है, ताकि भारत ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सके।

डॉ. राव ने विद्यार्थियों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल लर्निंग और अनुसंधान के क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण प्रावधानों की जानकारी दी। उन्होंने बताया that आने वाले समय में तकनीकी दक्षता और नवाचार ही आर्थिक विकास के प्रमुख आधार होंगे। सरकार ने उच्च शिक्षण संस्थानों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए विशेष निधि का प्रावधान किया है, जिससे विद्यार्थियों को नए विचारों और तकनीकों पर कार्य करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने यह भी बताया कि विश्वविद्यालयों में स्टार्टअप गतिविधियों को प्रोत्साहित करने, नए पाठ्यक्रम शुरू करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शैक्षणिक सहयोग बढ़ाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं। उन्होंने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर को कम करने के लिए डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जब देश के हर कोने में समान शैक्षणिक अवसर उपलब्ध होंगे, तभी वास्तविक विकास संभव होगा। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए छात्रवृत्ति में वृद्धि, उच्च शिक्षा के लिए सरल ऋण सुविधा और छात्रावासों के विस्तार जैसी योजनाएं भी बजट की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में शामिल हैं। इन पहलों से देश की बेटियों को आगे बढ़ने और अपने सपनों को साकार करने का अवसर मिलेगा। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित सीए राहुल अग्रवाल, जो सूरत सीए इंस्टिट्यूट के वाइस चेयरमैन हैं, ने विद्यार्थियों को केंद्र और गुजरात सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे केवल शिक्षा प्राप्त करने तक सीमित न रहें, बल्कि अपने ज्ञान का उपयोग समाज और देश के विकास में करें। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है और उनकी जागरूकता और सक्रिय भागीदारी से ही देश प्रगति के नए आयाम स्थापित कर सकता है। कार्यक्रम के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तर सत्र विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से आकर्षण का केंद्र रहा। इस सत्र में विद्यार्थियों ने बजट से जुड़े विभिन्न प्रश्न पूछे और विशेषज्ञों से उनके उत्तर प्राप्त किए। इससे न केवल उनकी जिज्ञासा का समाधान हुआ, बल्कि उन्हें आर्थिक नीतियों की गहराई को समझने का अवसर भी मिला। विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और उत्साह ने यह सिद्ध कर दिया कि नई पीढ़ी देश के आर्थिक भविष्य को लेकर गंभीर और जागरूक है। इस अवसर पर डॉ. मेहुल देसाई, डॉ. आशिष देसाई, डॉ. भूमि देसाई, डॉ. धवल पंड्या, डॉ. यू. टी. देसाई तथा डॉ. गौतम दुआ सहित महाविद्यालय के सभी व्याख्यातागण और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। सभी ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए इसे ज्ञान और जागरूकता का महत्वपूर्ण मंच बताया। "बजट टॉक ऐट कैंपस" कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को यह समझने में मदद की कि देश का बजट केवल सरकार की वित्तीय योजना नहीं, बल्कि देश के भविष्य का खाका होता है। इस आयोजन ने युवाओं के मन में देश की आर्थिक नीतियों के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना को और अधिक मजबूत किया। यह कार्यक्रम न केवल विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ, बल्कि उन्हें देश के विकास की यात्रा में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी साबित हुआ।

गुजरात के गांधीनगर से 'डिजिटल खाद्य वितरण' के एक नए युग की शुरुआत

▸▸ केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने देश की सर्वप्रथम सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) आधारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्था का शुभारंभ किया

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से 'डिजिटल इंडिया' का विस्तार आज सार्वजनिक वितरण व्यवस्था तक पहुंच गया है : केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह

▸▸ प्रधानमंत्री के 'सेवा ही साधना' मंत्र और टेक्नोलॉजी के समन्वय से 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' का संकल्प साकार होगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ रियायती अनाज वितरण में सीबीडीसी आधारित व्यवस्था साबरमती नदी के किनारे गरीबी के खिलाफ 'डिजिटल सत्याग्रह' साबित होगी : केंद्रीय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी

▸▸ गुजरात में ग्रेन एटीएम और सीबीडीसी मॉडल से नागरिकों को राशन की लाइनों से मुक्ति मिलेगी और अंतिम छोर के व्यक्ति को उसका पूरा हक मिलेगा : उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

▸▸ सीबीडीसी जैसी टेक्नोलॉजी आधारित व्यवस्था से भ्रष्टाचार और बिचौलियों का पूरी तरह से खात्मा हो जाएगा

▸▸ यह सार्वजनिक वितरण प्रणाली अगले तीन-चार वर्षों में देश भर में लागू होगी

▸▸ डिजिटल ट्रांजेक्शन के क्षेत्र में भारत दुनिया में अग्रणी, दुनिया में हो रहे कुल डिजिटल लेनदेन में भारत की हिस्सेदारी आधे से अधिक

▸▸ 'अन्नपूर्ति मशीन' केवल 35 सेकेंड में 25 किलो अनाज का वितरण करेगी, जो वजन, मूल्य और गुणवत्ता की दृष्टि से पूरी तरह सटीक होगी

(जीएनएस)। गांधीनगर : केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने रविवार को गांधीनगर से देश की सबसे पहली सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) आधारित पारदर्शी, आधुनिक और सरल सार्वजनिक वितवरण व्यवस्था (पीडीएस) का शुभारंभ किया।

महात्मा मंदिर में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी मौजूद रहे। इस समारोह के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री ने 1 किलो के सीलबंद पैक में चना और अरहर दाल के वितरण, अहमदाबाद के साबरमती जोन में अन्नपूर्ति ग्रेन एटीएम सुविधा और 'गरिमा पोषण-सुपोषित गरुड़ेश्वर तालुका' अभियान का शुभारंभ किया। इसके अलावा, गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग तथा उपभोक्ता शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र (सीईआरसी) के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस एमओयू से शिकायतों के निपटारे के लिए प्री-लिटिगेशन इकोसिस्टम विकसित होगा, जिससे अदालतों के बाहर ही विवादों का निपटारा हो सकेगा। इसके अतिरिक्त, 'उपभोक्ता उत्तरदायित्व सूचकांक' (सीआरआई) तैयार करने के लिए भी खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग द्वारा 'केयर रेटिंग' और उपभोक्ता शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

सार्वजनिक वितरण व्यवस्था को डिजिटल और पारदर्शी बनाने वाली विभिन्न परियोजनाओं के शुभारंभ अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने सभी लोगों को महाशिवरात्रि पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से आज 'डिजिटल इंडिया' का विस्तार सार्वजनिक वितरण व्यवस्था तक पहुंच गया है। एक दशक पहले देश के 60 करोड़ लोगों के परिवार में एक भी बैंक खाता नहीं था, लेकिन आज प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत डिजिटल ट्रांजेक्शन के क्षेत्र में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है और दुनिया में होने वाले कुल डिजिटल लेनदेन में से आधे भारत में हो रहे हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री ने डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के बारे में बात करते हुए कहा कि अब गरीबों को रियायती अनाज देने की दिशा में भी डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन साकार हो रहा है। जिसके अंतर्गत सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) प्रोजेक्ट और 'मेड इन गुजरात' जैसी टेक्नोलॉजी आधारित व्यवस्था से भ्रष्टाचार पूरी तरह से खत्म हो जाएगा और बिचौलियों के लिए कोई जगह नहीं बचेगी, इससे सुदूरवर्ती गांवों, आकांक्षी जिलों और पिछड़े इलाकों में रहने वाले नागरिकों को उनके अधिकार का पूरा अनाज सीधे और पारदर्शी तरीके से मिलेगा।

केंद्रीय गृह मंत्री ने सीबीडीसी प्रोजेक्ट में शामिल सभी संस्थानों और केंद्र एवं राज्य के विभागों को बधाई देते हुए कहा कि यह आधुनिक व्यवस्था प्रधानमंत्री के मंत्र 'मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' को सही मायने में चरितार्थ करती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अंतर्गत आज देश के 81 करोड़ लोगों को सरकार की ओर से मुफ्त राशन दिया जा रहा है। उन्हें मिलने वाली खाद्य सुरक्षा अब डिजिटल और पारदर्शी बन गई है।

आज प्रारंभ किए गए ग्रेन एटीएम, अन्नपूर्ति मशीन और दाल की नई पैकिंग तथा गरिमा पोषण सहित जैसे प्रोजेक्ट का उल्लेख करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने इन्हें गरीबों को अन्न सुरक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न क्रांतिकारी पहलें करार दिया।

श्री शाह ने कहा कि अन्नपूर्ति मशीन से केवल 35 सेकेंड में 25 किलो अनाज का वितरण संभव हो पाएगा, जो वजन, मूल्य और गुणवत्ता की दृष्टि से पूरी तरह से सटीक होगा। आधार-आधारित बायोमेट्रिक प्रणाली, सीबीडीसी और रिजर्व बैंक के पेमेंट सिस्टम से जुड़ी यह व्यवस्था अगले तीन-चार वर्षों में पूरे देश में लागू की जाएगी, जिससे देश भर के गरीबों को उनके अधिकार का गुणवत्तापूर्ण राशन तय समय पर पूरी पारदर्शिता के साथ मिलेगा।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विभिन्न योजनाओं के सफल कार्यान्वयन से गरीब और अंतिम छोर के नागरिकों का सर्वांगीण विकास हुआ है। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 4 करोड़ घरों का निर्माण, 13 करोड़ घरों में नल से जल कनेक्शन, लगभग 13 करोड़ घरों में गैस सिलेंडर और 12 करोड़ घरों में शौचालय की उपलब्धता के साथ ही 2.91 करोड़ महिलाएं लखपति दीदी बनी हैं, जो सरकार की योजनाओं और अभियानों की सफलता को दर्शाता है। इसके अलावा, उन्होंने पीएम स्वनिधि योजना जैसी विभिन्न योजनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी सफलता के आंकड़े बताए। उन्होंने कहा कि लोगों को विकास की मुख्यधारा में शामिल करने और उन्हें गरीबी से बाहर निकालने में ये योजनाएं महत्वपूर्ण साबित हुई हैं।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किसानों और पशुपालकों के हितों की रक्षा के लिए दृढ़तापूर्वक कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार किसानों के कल्याण के लिए सदैव प्रतिबद्ध रही है। पिछले एक दशक में किसानों से समर्थन मूल्य अनाज की खरीदी में 15 गुना वृद्धि हुई है और कृषि बजट भी 26,000 करोड़ रुपए से बढ़ाकर 1,29,000 करोड़ रुपए कर दिया गया है। मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) में भी भारत के डेयरी, कृषि और मत्स्य पालन क्षेत्र को संपूर्ण सुरक्षा कवच दिया गया है, जिससे भारतीय उत्पादों के लिए दुनिया के बाजार खुल जाएंगे।

अंत में केंद्रीय गृह मंत्री ने सीबीडीसी और पारदर्शी वितरण व्यवस्था के पायलट प्रोजेक्ट के लिए गुजरात का चयन करने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी और गुजरात सरकार को बधाई दी और इस लीक-प्रूफ सिस्टम को विकसित भारत का ब्लू प्रिंट करार दिया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में 'जो कहना, वह करना' के मंत्र के साथ देश में जनकल्याण का एक नया इतिहास रचा जा रहा है। प्रधानमंत्री ने 'ज्ञान' अर्थात गरीब, युवा, महिला और अन्नदाता के सशक्तिकरण के माध्यम से विकसित भारत के निर्माण की मजबूत नींव रखी है।

मुख्यमंत्री ने टेक्नोलॉजी के परिवर्तनकारी प्रभाव का जिक्र करते हुए कहा कि एक समय था जब भारत में डिजिटल भुगतान को लेकर लोगों के मन में शक-संदेह था, उन शंकाओं को दूर कर आज भारत दुनिया में सबसे बड़े यूपीआई यूजर के रूप में जाना जाता है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी), जनधन, आधार और मोबाइल की त्रिवेणी तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित डेटाबेस कनेक्टिविटी के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ अब सीधे और विश्वसनीयता के साथ लाभार्थियों तक पहुंच रहा है। आहार, आवास, आरोग्य और आय के स्तंभों पर ध्यान केंद्रित करने के परिणामस्वरूप पिछले एक दशक में देश के 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में अब अनाज प्राप्त करने के लिए 'ग्रेन एटीएम' कार्यरत होंगे। इस एटीएम से केवल 35 सेकेंड में 25 किलो अनाज का वितरण संभव होगा और ये 24 घंटे कार्यरत रहेंगे। इस सुविधा के कारण विशेष रुप से श्रमिक और मजदूर वर्ग अपने कार्य समय के घंटों के बाद भी किसी भी समय राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत मिलने योग्य गेहूं, चावल और दाल प्राप्त कर सकते हैं, जो हाशिए पर खड़े लोगों के सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम सिद्ध होगा।

सीबीडीसी आधारित सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के बारे में मुख्यमंत्री ने कहा कि इस टेक्नोलॉजी के माध्यम से लाभार्थियों को डिजिटल टोकन के द्वारा सब्सिडी, वस्तु का वजन और उसकी कीमत की सटीक जानकारी मिलेगी। इस डिजिटल ट्रैकिंग और मॉनिटरिंग के कारण योजना के लाभों में 100 फीसदी पारदर्शिता आएगी और 'सेचुरेशन एप्रोच' यानी प्रत्येक पात्र लाभार्थी तक पहुंचने का सरकार का संकल्प सही मायने में साकार होगा।

मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि हाल ही में अमूल एआई द्वारा पशुपालकों को एआई टेक्नोलॉजी के साथ जोड़ने के बाद अब सार्वजनिक वितरण व्यवस्था में टेक्नोलॉजी का यह प्रयोग एक मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रधानमंत्री के मंत्र 'सेवा ही साधना' का अनुसरण करते हुए टेक्नोलॉजी के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुविधाएं पहुंचाकर वर्ष 2047 तक 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के निर्माण की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ रही है।

केन्द्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी

केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी ने सभी को महाशिवरात्रि पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सीबीडीसी आधारित यह केवल टेक्नोलॉजी ऐप और पोर्टल ही नहीं है, बल्कि इससे सभी जरूरतमंदों लगभग 80 करोड़ लाभार्थियों को उनके अनाज प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त होगा। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में चल रहे दुनिया के सबसे बड़े खाद्य कार्यक्रम को इस नई पहल से विशेष बल मिलेगा। उन्होंने कहा कि अनाज वितरण व्यवस्था को इस टेक्नोलॉजी के साथ जोड़ना एक चुनौती थी, लेकिन 'डिजिटल इंडिया' अभियान के तहत यह कार्य बहुत आसान बन गया।

केंद्रीय मंत्री श्री जोशी ने कहा कि देश भर में राशन कार्ड का डिजिटलीकरण होने से 'वन नेशन, वन राशन कार्ड' की संकल्पना साकार हुई है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की पहल से शुरू हुई डिजिटल कूपन के जरिए लाभार्थी किसी भी समय ग्रेन एटीएम पर जाकर क्यूआर कोड स्कैन करके अनाज प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा, साधारण फीचर फोन उपयोगकर्ता लाभार्थी को भी एसएमएस के जरिए प्राप्त ओटीपी से अनाज की सुविधा दी जाएगी।

श्री जोशी ने कहा कि इस टेक्नोलॉजी के लागू होने से लगभग दो से तीन करोड़ फर्जी राशन कार्ड रद्द हो चुके हैं। सीबीडीसी आधारित व्यवस्था शुरू होने से वास्तविक लाभार्थी को ही उसका लाभ मिलेगा। इस अनाज की डिजिटल रकम लाभार्थी के वॉलेट में जमा होने से वह इसके जरिए उचित मूल्य की दुकान और ग्रेन एटीएम से अनाज की खरीदी कर सकेगा, जबकि अन्य स्थानों पर इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। इस डिजिटल आधारित अनाज वितरण प्रक्रिया की गुजरात से शुरुआत होने से देश के बाकी राज्यों में भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और जाली राशन कार्ड भी अपने तरीके से समाप्त हो जाएंगे।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि रियायती अनाज वितरण में सीबीडीसी आधारित व्यवस्था साबरमती नदी के किनारे गरीबी के खिलाफ 'डिजिटल सत्याग्रह' साबित होगी, जिससे कालाबाजारी पर भी और रोक लगेगी और जरूरतमंद लाभार्थी तक अनाज तेजी से पहुंचेगा। उन्होंने कहा कि इस प्रयोग को आगामी समय में देश भर में लागू किया जाएगा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि देश की डिजिटल करेंसी गरीब की थाली तक अनाज पहुंचाएगी। आज गुजरात की धरती पर एक बार फिर एक नया इतिहास रचने जा रहा है। हम सभी हम सभी लोग एक ऐसी क्रांति के गवाह बनने जा रहे हैं, जो केवल गुजरात ही नहीं, बल्कि पूरे भारत की सार्वजनिक वितरण व्यवस्था की दिशा और दशा बदल देगी।

श्री संघवी ने कहा कि भारत जैसे विशाल देश में 'खाद्य सुरक्षा' हमेशा एक बड़ी चुनौती रही है। अतीत में सरकारी अनाज लाभार्थी तक पहुंचने से पहले बिचौलियों तक पहुंच जाता था और राशन की दुकानों पर लंबी कतारों जैसे समस्याएं देखने को मिलती थीं। सीबीडीसी आधारित पीडीएस प्रोजेक्ट इन सभी समस्याओं का स्थायी रूप से समाधान करेगा।

उन्होंने कहा कि आम तौर पर नई टेक्नोलॉजी का पहला लाभ बड़े उद्योगपतियों को मिलता है, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के नेतृत्व में भारत ने एक राह दिखाई है। 'डिजिटल करेंसी' जैसी आधुनिक टेक्नोलॉजी का सबसे पहला उपयोग गरीब की थाली तक भोजन पहुंचाने के लिए किया जा रहा है। अब, लाभार्थियों को दुकानदारों की राह देखने की आवश्यकता नहीं होगी। चौबीसों घंटे, किसी भी वक्त ग्रेन एटीएम पर जाकर केवल 5 मिनट में ही अनाज प्राप्त किया जा सकता है। इस व्यवस्था में वजन में 1 ग्राम का भी अंतर नहीं होगा, जो डिजिटल इंडिया का उत्तम उदाहरण है। सीबीडीसी, ग्रेन एटीएम और बायोमेट्रिक जैसी टेक्नोलॉजी के साथ आगे बढ़ रहा गुजरात का यह मॉडल आगामी समय में देश के लिए पथप्रदर्शक बनेगा और पात्र लोगों को उनका अधिकार पारदर्शी तरीके से और बिना किसी परेशानी के मिलेगा।

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री मोना खंधार ने स्वागत भाषण में पूरे कार्यक्रम और नए प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत डिजिटल क्रांति की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत की सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी यानी ई-रूपी की घोषणा के साथ देश में आधुनिक फिनटेक के एक नए युग की शुरुआत हुई, जिसका नेतृत्व करने के लिए गुजरात तैयार है।

कार्यक्रम में केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री निमुबेन बांभणिया, गुजरात के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी, राज्य मंत्री श्री पी.सी. बरंडा, गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, कई सांसद और विधायक, भारत सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के सचिव श्री संजीव चोपड़ा, भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री पी. वासुदेव, पंजाब नेशनल बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री डी. सुरेन्द्रन और केंद्र एवं राज्य सरकार के अधिकारी और कर्मचारियों सहित बड़ी संख्या में लाभार्थी उपस्थित रहे।

शेयर बाजार की तेज गिरावट से दिग्गज कंपनियों की साख पर चोट, आईटी और बैंकिंग सेक्टर को भारी नुकसान

(जीएनएस)। देश के शेयर बाजार में पिछले सप्ताह आई तेज गिरावट ने भारतीय कॉरपोरेट जगत की बड़ी कंपनियों को गहरा झटका दिया है। बाजार के कमजोर रुख के कारण देश की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से छह कंपनियों के संयुक्त बाजार पूंजीकरण में तीन लाख करोड़ रुपये से अधिक की भारी गिरावट दर्ज की गई। इस गिरावट का असर विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, बैंकिंग, टेलीकॉम और बीमा क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों पर देखने को मिला, जिससे निवेशकों की संपत्ति में भी बड़ी कमी आई और बाजार की धारणा नकारात्मक हो गई। पिछले सप्ताह शेयर बाजार में लगातार दबाव बना रहा और प्रमुख सूचकांकों में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई। निवेशकों की सतर्कता, विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली, वैश्विक बाजारों से मिले कमजोर संकेत और चुनिंदा शेयरों में मुनाफावसूली के कारण बाजार का रुख कमजोर रहा। प्रमुख सूचकांक में करीब 953 अंकों की गिरावट दर्ज की गई, जिसने निवेशकों के विश्वास को प्रभावित किया और बड़े शेयरों में बिकवाली को बढ़ावा दिया। इसका सीधा असर देश की सबसे बड़ी और प्रतिष्ठित कंपनियों के बाजार मूल्य पर पड़ा।

सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों को इस गिरावट का सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ा। देश की अग्रणी आईटी कंपनी Tata Consultancy Services के बाजार पूंजीकरण में सबसे बड़ी गिरावट दर्ज की गई। कंपनी का मार्केट कैप लगभग 90 हजार करोड़ रुपये से अधिक घटकर करीब 9.7 लाख करोड़ रुपये रह गया। यह गिरावट इस बात का संकेत है कि वैश्विक स्तर पर आईटी सेवाओं की मांग में अनिश्चितता और निवेशकों की सतर्कता का असर इस क्षेत्र पर पड़ा है। इसी तरह देश की एक अन्य प्रमुख आईटी कंपनी Infosys के बाजार मूल्य में भी लगभग 70 हजार करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट दर्ज की गई और इसका कुल मूल्यांकन घटकर करीब 5.5 लाख करोड़ रुपये रह गया। आईटी क्षेत्र का वैश्विक बाजारों से गहरा जुड़ाव होता है, इसलिए अंतरराष्ट्रीय आर्थिक परिस्थितियों का सीधा प्रभाव इन कंपनियों के प्रदर्शन और मूल्यांकन पर पड़ता है।

बैंकिंग क्षेत्र की बड़ी कंपनियां भी इस गिरावट से अछूती नहीं रहीं। देश के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक HDFC Bank के बाजार पूंजीकरण में लगभग 54 हजार करोड़ रुपये की कमी दर्ज की गई। यह गिरावट इस बात का संकेत है कि निवेशकों ने वित्तीय क्षेत्र के कुछ शेयरों में मुनाफावसूली की और बाजार की अनिश्चितता के कारण सतर्क रुख अपनाया। इसी तरह देश की सबसे बड़ी कंपनी Reliance Industries के बाजार मूल्य में भी लगभग 42 हजार करोड़ रुपये की गिरावट दर्ज की गई। हालांकि रिलायंस इंडस्ट्रीज अब भी देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी हुई है, लेकिन बाजार की कमजोरी का असर इसके मूल्यांकन पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

बीमा और टेलीकॉम क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों को भी नुकसान झेलना पड़ा। सरकारी बीमा क्षेत्र की दिग्गज कंपनी Life Insurance Corporation of India के बाजार पूंजीकरण में लगभग 24 हजार करोड़ रुपये की गिरावट दर्ज की गई। इसी तरह देश की अग्रणी टेलीकॉम कंपनी Bharti Airtel के बाजार मूल्य में भी करीब 19 हजार करोड़ रुपये की कमी आई। इन कंपनियों के बाजार मूल्य में आई गिरावट से यह स्पष्ट होता है कि बाजार की कमजोरी का असर विभिन्न क्षेत्रों की बड़ी कंपनियों पर व्यापक रूप से पड़ा है।

हालांकि बाजार में समग्र रूप से गिरावट का माहौल रहा, लेकिन कुछ कंपनियों ने इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में भी मजबूती दिखाई। देश के सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक State Bank of India के बाजार पूंजीकरण में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई और इसका कुल मूल्य 11 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया। यह वृद्धि इस बात का संकेत है कि बैंकिंग क्षेत्र के कुछ शेयरों में निवेशकों का विश्वास बना हुआ है और उन्होंने इस गिरावट के दौरान भी इन कंपनियों में निवेश जारी रखा।

इसी तरह वित्तीय सेवा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी Bajaj Finance के बाजार मूल्य में भी लगभग 26 हजार करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की गई। इसके अलावा इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र की दिग्गज कंपनी Larsen & Toubro के बाजार पूंजीकरण में भी करीब 14 हजार करोड़ रुपये का इजाफा हुआ। निजी बैंकिंग क्षेत्र की प्रमुख कंपनी ICICI Bank के शेयरों में भी सीमित लेकिन सकारात्मक वृद्धि देखने को मिली। इन कंपनियों की मजबूती इस बात का संकेत है कि बाजार में गिरावट के बावजूद निवेशकों ने कुछ मजबूत और स्थिर कंपनियों में भरोसा बनाए रखा।

विशेषज्ञों का मानना है कि वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों, ब्याज दरों को लेकर अनिश्चितता, विदेशी निवेशकों की बिकवाली और बाजार में मुनाफावसूली के कारण इस तरह की गिरावट देखने को मिली। आईटी क्षेत्र पर विशेष रूप से दबाव इसलिए पड़ा क्योंकि इस क्षेत्र की आय का बड़ा हिस्सा विदेशी बाजारों से आता है और वैश्विक मांग में किसी भी तरह की अनिश्चितता का सीधा असर इन कंपनियों पर पड़ता है। वहीं बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के कुछ शेयरों में मजबूती यह दर्शाती है कि घरेलू अर्थव्यवस्था की स्थिति अपेक्षाकृत स्थिर बनी हुई है।

साबरमती स्टेशन पर पुनर्विकास के अंतर्गत हाई रूफ निर्माण हेतु ट्रस (Truss) का सफल लॉन्च यात्री सुविधाओं को मिलेगा नया आयाम

(जीएनएस)। भारतीय रेल द्वारा यात्री सुविधाओं के उन्नयन एवं आधुनिक अवसंरचना विकास की दिशा में साबरमती स्टेशन का पुनर्विकास कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है। इस पुनर्विकास परियोजना के अंतर्गत स्टेशन पर ट्रैकों के ऊपर विशाल हाई-रूफ एवं कॉन्कोर्स का निर्माण किया जा रहा है, जिससे स्टेशन को आधुनिक स्वरूप देने के साथ-साथ यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी। दिनांक 15.02.2026 को मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने स्टेशन पर तीव्र गति से चल रहे पुनर्विकास कार्यों का विस्तृत निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने प्लेटफॉर्म संख्या 4/5 एवं 2/3 के ऊपर हाई-रूफ निर्माण के लिए लॉन्च किए गए 28 मीटर लंबे ट्रस का अवलोकन किया।

निर्माणाधीन हाई-रूफ का प्लेटफॉर्म संख्या 4 से 7 के बीच ट्रस लॉन्चिंग का कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि शेष भाग में कार्य प्रगति पर है। जिसका प्लेटफॉर्म संख्या 7 से प्लेटफॉर्म संख्या 1 तक तथा आगमन फुटओवर ब्रिज से सर्कुलेटिंग एरिया तक विस्तार होगा।

कॉन्कोर्स क्षेत्र में विशाल प्रतीक्षालय (वेटिंग हॉल) एवं फूड प्लाजा जैसी आधुनिक सुविधाए भी होगी, जिससे यात्रियों को बेहतर आराम एवं खानपान की सुविधा प्राप्त होगी। कॉन्कोर्स का क्षेत्रफल लगभग 110×36 वर्गमीटर होगा। वहीं हाई-रूफ का आकार 122×171 मीटर तथा 88×110 मीटर होगा, जिससे कुल लगभग 30,542 वर्गमीटर क्षेत्र ट्रैकों के ऊपर कवर होगा। यह छत प्लेटफॉर्म से लगभग 65 फीट की ऊंचाई पर स्थापित की जा रही है।

इसी क्रम में 28×4.25×3.25 मीटर आकार एवं लगभग 26 टन वजनी एक विशाल ट्रस को 65 फीट की ऊंचाई पर 810 टन क्षमता वाली क्रेन की सहायता से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया। कार्यस्थल की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद यह कार्य 8 घंटे के मेगा ब्लॉक के दौरान सुरक्षित एवं सफलतापूर्वक संपन्न किया गया।

स्टेशन पुनर्विकास योजना के अंतर्गत यात्रियों की सुगमता हेतु 20 लिफ्ट, 20 एस्केलेटर तथा 20 सीढ़ियों का प्रावधान किया जा रहा है। इन आधुनिक सुविधाओं से यात्रियों की आवाजाही सुगम होगी तथा स्टेशन पर भीड़ प्रबंधन में भी सहायता मिलेगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर स्वयंभू भवनाथ महादेव की श्रद्धाभाव से पूजा-अर्चना की

▸▸ मुख्यमंत्री ने आस्था के महाकुंभ महाशिवरात्रि के मेले में शामिल होकर धन्यता महसूस की

▸▸ मुख्यमंत्री ने भवनाथ मंदिर परिसर में गिरनार तीर्थक्षेत्र और अलग-अलग अखाड़ों के साधु-संतों का आशीर्वाद प्राप्त कर संतों का सम्मान और अभिवादन किया

▸▸ ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया भी भवनाथ महादेव के दर्शन-पूजन में श्रद्धाभाव से शामिल हुए मुख्यमंत्री ने भवनाथ मंदिर परिसर में भक्तों के साथ सहजता से बातचीत कर उनका अभिवादन किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर गिरनार पर्वत की गोद और भवनाथ तलहटी में बिराजमान स्वयंभू भवनाथ महादेव के श्रद्धाभाव के साथ दर्शन कर पूजा-अर्चना की।

मुख्यमंत्री के साथ ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया भी श्रद्धापूर्वक भवनाथ महादेव के दर्शन और पूजा में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री ने महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर जूनागढ़ में परंपरागत रूप से आयोजित होने वाले पांच दिवसीय महाशिवरात्रि मेले के अंतिम दिन भवनाथ मंदिर परिसर में साधु-संतों का आशीर्वाद प्राप्त कर उन्हें अंगवस्त्र अर्पित किया और विशेष सम्मान के साथ उनका अभिवादन किया।

संत समागम के लिए प्रसिद्ध इस महाशिवरात्रि के मेले में मुख्मयंत्री ने साधु-संतों के साथ मुलाकात कर आध्यात्मिक चेतना की भी अनुभूति की।

श्री भूपेंद्र पटेल ने भवनाथ मंदिर में स्थित अखंड धूणा (धूनी) के भी दर्शन किए और बाद में मृगी कुंड में श्रद्धापूर्वक नमन किया।

मुख्यमंत्री ने आस्था के महाकुंभ महाशिवरात्रि के मेले में भवनाथ मंदिर परिसर के सत्संग हॉल में श्री मुक्तानंद बापू, श्री शेरनाथ बापू, श्री हरिहरानंद बापू, श्री महेश गिरि बापू, श्री महेन्द्रानंद गिरि बापू, श्री संपूर्णानंदजी बापू, श्री राजेन्द्रदास बापू, श्री भारद्वाज गिरि बापू, श्री बुद्ध गिरि बापू, श्री सोमनाथ जी बापू सहित अन्य साधु-संतों से मुलाकात कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। साथ ही, उन्होंने साधु-संतों को अंगवस्त्र और माला पहनाकर अभिवादन किया। इस अवसर पर जिले के पदाधिकारी और अधिकारी उपस्थित रहे।

इस मौके पर जिला कलेक्टर श्री अनिल कुमार राणावसिया और गुजरात पवित्र यात्राधाम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री रमेश मेरजा ने स्मृति चिह्न भेंट कर मुख्यमंत्री का स्वागत-सम्मान किया। इसके साथ ही ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया का भी स्मृति चिह्न भेंट कर प्रशासन द्वारा स्वागत किया गया।

प्रांत और मेला अधिकारी श्री चरणसिंह गोहिल ने महाशिवरात्रि के मेले के बारे में जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने भवनाथ मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के साथ सहजतापूर्वक बातचीत की और उनका अभिवादन किया।

उल्लेखनीय है कि महाशिवरात्रि के मेले में अलग-अलग अखाड़ों के साधु-संतों और दिगंबर साधुओं की महाशिवरात्रि पर्व पर निकलने वाली रवेड़ी (शाही सवारी) का भी विशेष महत्व है।

भवनाथ मंदिर में मुख्यमंत्री का महापौर श्री धर्मेशभाई पोशिया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री हरेशभाई ठुम्मर, सांसद श्री राजेशभाई चुड़ासमा, विधायक श्री संजयभाई कोरड़िया, श्री देवाभाई मालम, श्री भगवानजीभाई करगटिया, उप महापौर श्री आकाशभाई कटारा, मनपा स्थायी समिति अध्यक्ष सुश्री पल्लवीबेन ठाकर, शासक पक्ष के नेता श्री मननभाई अभाणी, दंडक श्री कल्पेशभाई अजवाणी, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री चंदुभाई मकवाणा, शहर भाजपा अध्यक्ष श्री गौरवभाई रूपारेलिया, अग्रणी श्री धवलभाई दवे, श्री पुनितभाई शर्मा, सावज डेयरी के चेयरमैन श्री दिनेशभाई खटारिया, अग्रणी श्री वेलजीभाई मसाणी सहित कई पदाधिकारी और अधिकारियों ने स्वागत किया।